वर्ष 42 अंक : 2 9.4.2019 मंगलवार (मार्च - अप्रैल) वार्षिक शुल्क : ₹ 111.00

भगवत् कृपा

साकार प्रगट ब्रह्म को जो पहचाने, वो परम को पाये

निजात्मानं ब्रह्मरूपं देहत्रयविलक्षणम् । विभाव्य तेन कर्तव्या भक्तिः कृष्णस्य सर्वदा ॥ शिक्षापत्री, ११६

महाप्रभु स्वामिनारायण प्रणीत सनातन, सचेतन और सक्रिय गुणातीतज्ञान का अनुशीलन करने वाली द्विमासिक सत्संग पत्रिका

गुरुजी के पास रहने से बहुत कुछ सीखने को मिला है... – प.पू. कोठारी प्रेमस्वरूपस्वामीजी

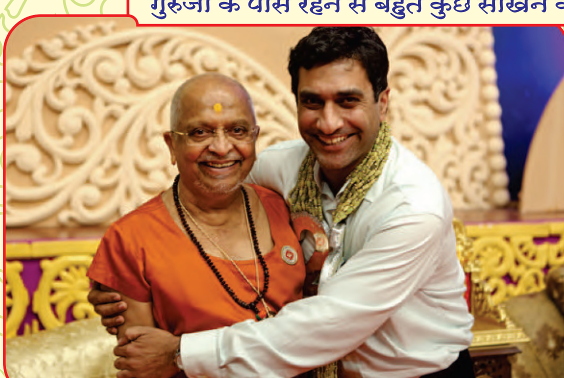

गुरुजी के साथ जुड़े रहो, गुरुजी की मूर्ति का चिंतन करते रहो– भीतर का सब जल जाएगा... – संतभगवंत प.पू. साहेबजी

कोई भी संप्रदाय, संस्था या आश्रम

नींव की ईंट को हम कभी भी भूल नहीं सकते। यह

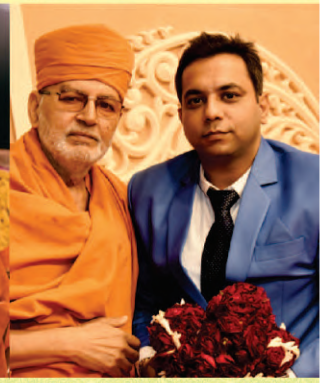

बात गुरुजी की रग-रग में व्याप्त है... – प.पू. महेन्द्र बापु

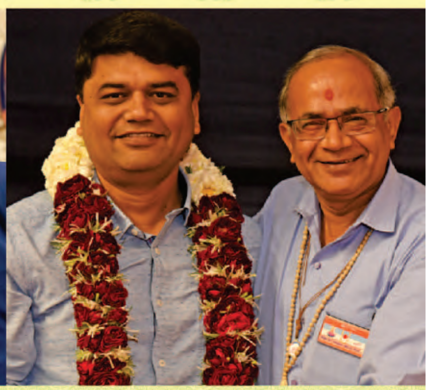

रामनौमी पर उदित शाश्वत् सूर्य!

'पारमेश्वरी शक्ति के पास आसुरी संपत्ति का बल निर्माल्य व असहाय है' – इस सनातन सत्य का दर्शन कराने के लिए चैत्री शुक्ला नौमी के परम पवित्र दिन पर, **भगवान श्री रामचंद्रजी** प्रगटे और धरती पर धर्म का संस्थापन किया। सांकेतिक रूप से इसी मंगलकारी दिन को ही **भगवान श्री स्वामिनारायण** ने अपने अवतरण के लिए पसंद किया।

कोटि-कोटि धन्यवाद हो पुरुषोत्तमनारायण की उस सदा दिव्य साकार रसघन मूर्ति श्री सहजानंदस्वामी महाराज को, जिन्होंने आध्यात्मिक, अधिभौतिक एवं अधिदैविक संताप से त्रस्त मानव जीवन को अपने आश्रय में लेकर, मानो शीतल-शांत अमृत की जीवंत गंगा सदैव के लिए बख़्शिश दी। जीवंत गंगा मतलब – आश्रित जीव की डोर संभालने के लिए, अपने निर्मल गुणातीत संत की परंपरा सदैव के लिए पृथ्वी पर प्रगट रख दी! दीप से दीप प्रज्वलित रखा! ऐसे निर्मल गुणातीत पुरुषों का जिस-जिसने सेवन किया है, वे सभी शीलवान, निर्मल एवं सदा सर्वथा सुखी हुए हैं।

वर्षों के बाद भी जो कार्य संभव न हो, वह आज वैज्ञानिक करामात से मानो मिनिटों में ही हो जाता है। ऐसी ही बात **मूल अक्षरमूर्ति गुणातीतानंदस्वामीजी** ने **'स्वामी की बातों'** में करी है–

'कोटि कल्प में भी जो साधना न हो पाए, वह एक दिन में सरलता से हो, ऐसी संभावना, बल, सामर्थ्य, सुख, ऐश्वर्य महाराज ने समग्र मानव जाति पर करुणा करके मौज में बख़्शिश दी है और इसीलिए ही ऐसे गुणातीत पुरुष के द्वारा पृथ्वी पर वे अखंड रहे हैं।'

ऐसे **भगवत्स्वरूप गुणातीत पुरुष को पहचानना और उनका सेवन एवं समागम करना ही 'सत्संग' कहा जाए।**

सभी को सदैव सुखी करने के संकल्प से मूल अक्षरमूर्ति गुणातीतानंदस्वामीजी ने ऐसे सत्संग का बीड़ा उठाया। फलस्वरूप भगवत्स्वरूप संत को समर्पित होकर जीने वाले एक समाज का उद्‌भव हुआ है। प्रगट प्रभु की इच्छा को ही अपना प्रारब्ध मान कर वे सभी जीवन जीते हैं। सत्संग में मिलजुल कर उठाव लेने की उनमें एक भावना भी है। फिर भी उन्हें इसमें बाधा क्यों आती है?

एक बात समझना कि **अनंत जन्मों से जीव पंचाइती करता आया है।** अपनी इस वृत्ति में वह इतना अधिक मशगूल हो गया है कि उससे पृथक होकर उसे पहचान नहीं पाता। **जाने-अनजाने में भी अन्यों की टीकाचर्चा करते हुए, अपनी अच्छाईपेशी प्रदर्शित करने का अति सूक्ष्म स्वभाव दृढ़ हो गया है। इस स्वभाव के कारण ही वह अन्य भक्तों की खोट देखने में और उनके साधना मार्ग में नुक़्स निकालने में लगा रहता है और उन्हें ताना मारता रहता है। यह करना साधक के लिए योग्य नहीं है।**

पुण्य एकत्र करने के बजाय वह पाप के पोटले ही बाँधता रहता है और प्रभु की कृपादृष्टि पाकर अपनी प्रकृति का दिव्यता में रूपांतर करवा लेने के बजाय उसे ही दृढ़ करता जाता है। करी हुई सेवाएँ निष्फल हो जाती हैं।

वचनामृत गढडा मध्य 53 के मुताबिक अपने दोष का सम्यक् दर्शन और उसे टालने की शीघ्र ज़रूरत को न समझने के कारण साधक अपनी वृत्ति में से बाहर नहीं निकल पाता। वच. गढडा प्रथम 20 में महाराज ने ऐसे

साधक को खूब फटकारा है।

साधक यदि सदैव महाराज और स्वामी की अतिशय अपरंपार महिमा में डूबा रहेगा, तो वच. गढडा प्रथम 24 के अनुसार अक्षरपुरुषोत्तम महाराज एवं सत्पुरुष की निश्रा में भजन करने वाले सभी को वह दिल से बड़ा जानेगा और वच. गढडा प्रथम 58 के अनुसार भगवान के माहात्म्य की अपेक्षा स्वयं को न्यून जानेगा।

मूल अक्षरमूर्ति गुणातीतानंदस्वामीजी तो कहते–

'इन सत्संगियों के बालकों को देखता हूँ, तो इनमें अवतार कोटि से भी अधिक दैवत दिखाई देता है।'

यह कह कर स्वामी को इतना ही समझाना था कि ऐसे **संत की पहचान हुई और उनसे लगाव हो गया, वही परम पद की प्राप्ति कही जाए।** क्योंकि भगवान में अखंड रहते ऐसे संत तो अंतर से निर्मल एवं निर्दोष मूर्ति साधु हैं। अतः अपने दृढ़ आश्रितों को धीरे-धीरे ऐसे ही निर्मल और निर्दोष बना देंगे, उसमें कोई संशय नहीं है।

सो, साधक का कर्तव्य है कि बिना किसी अपेक्षा, प्रेमपूर्वक अपने साथी-मुक्तों का संत से दृढ़ लगाव करवाना और वच. गढडा अंत्य. 7, 11, गढडा मध्य 61 के अनुसार 'संत की मरज़ी' में निमग्न रहने का निर्देश करना। इससे अधिक अपेक्षा-आग्रह उनसे रख कर, दोषारोपण या फरियाद करें, मिथ्या बहस करें, ज्ञान झाड़ कर उनके प्रति लापरवाही रखें, वह तो वच. गढडा अंत्य. 26 के अनुसार हमारी कसर या कोई नासमझी है।

आध्यात्मिक मार्ग की यात्रा कर चुके संत का अनुभव कहता है–

'ऊँचा-ऊँचा सब चलें, नीचा चले न कोय, तुलसी नीचा जो चले, वो सबसे ऊँचा होय।'

वच. गढडा प्रथम 24, 58, 62, गढडा मध्य 25 तथा गढडा अंत्य. 26 के अंतिम अनुच्छेद (पैराग्राफ) का अभ्यास और मनन यदि करते रहेंगे, तो उपरोक्त बात अंतर में दृढ़ हो जाएगी। तब, महाराज, स्वामी और सत्पुरुषों की सच्ची प्रसन्नता किस प्रकार मिलेगी एवं विनम्रता या सच्चा स्वामीसेवकभाव किसे कहा जाता है– इस बात का स्पष्ट ख्याल पड़ जाएगा। विवेक जाग्रत हो जाएगा और निर्मल संत की रीति-नीति का ख्याल पड़ जाएगा। विनम्रता में ही माल माना जाएगा। फलस्वरूप भगवत्स्वरूप संत के अनुग्रह से साधक का अंतर सदैव के लिए निर्मल और निर्दोष बन जाएगा। कैसे भी विपरीत या नापसंद हालातों के बीच वच. कारियाणी 9 के अनुसार तहे दिल, महिमा की दृष्टि और निर्मल अंतर से भगवान एवं भक्तों के गुणगान गाने लगेगा।

इसलिए तो प.पू. स्वामिश्री सेवकों को स्पष्ट और भारपूर्वक अनुरोध करते हैं कि उपरोक्त वचनामृतों के अंतिम अनुच्छेदों का रोज़ पठन करके, संत-हरिभक्तों के गुण-महिमा की जुगाली करके ही विश्राम में जाना। केवल गुणगान ही करने की स्पष्ट आज्ञा करते हैं। अंतर में विनम्रता प्रगट हो और ऐसी निर्मल दृष्टि हम सभी को प्राप्त हो। पुरानी आदतों और स्वभावों की पहचान हो जाए, उनसे संपूर्ण छुटकारा मिल जाए और समर्थ सेवक की प्रभु भक्ति का सच्चा ख्याल आता जाए, ऐसी इस सौभाग्य दिन पर श्रीजी महाराज के वरद् चरणारविंद में अंतर के उत्कंठभाव व सच्चे दिल से प्रार्थना है।

वर्षों पहले 1976-77 में रामनौमी के परम पवित्र अवसर निमित्त लिखवाए उपरोक्त लेख में साधक की जीवदशा का संपूर्ण ख्याल पड़ता है और उससे उबरने का उपाय भी खूब स्पष्ट रीति से बताया है। वर्तमान में भी हमें मिले प्रगट

सत्पुरुष निरंतर इसी प्रकार की क़वायत देते हैं। उनका एक मात्र उद्यम यही है कि उनके जोग में आए मुमुक्षु सत्संग को सही अर्थ में समझें और उसी के अनुसार आचरण करके महामानव की कक्षा प्राप्त करके जन्म सार्थक करें। सो, आ रही **14 अप्रैल रामनौमी** को **भगवान स्वामिनारायण के 238 वें प्राकट्य पर्व** एवं दूसरे दिन चैत्र शुक्ला दशमी को **प.पू. गुरुजी की 59वीं पार्षदी दीक्षा तिथि** जैसे मंगलकारी दिनों पर अंतर से अरज करें कि– प्रभु ! आप तो हमें सही दिशा की ओर पल-पल इंगित करते रहते हैं, लेकिन कहीं न कहीं आपसे अधिक हम पर हमारा मन और जड़बुद्धि हावी हो जाते हैं और प्रसंग पर आपसे मिले 'गुणातीत ज्ञान' को हम नज़रअंदाज कर जाते हैं। तत्पश्चात् पछतावा तो होता है, लेकिन अब इतने वर्षों का आपका निरंतर सान्निध्य होने के बाद हमें सोचना चाहिए कि केवल पश्चात्ताप किया करने से कुछ नहीं होगा। समय तो मानो पंख लगा कर उड़ता जा रहा है; उसे समझें और आपकी रीति से वर्त कर अब तो आपको हमारी ओर से ठंडक-निश्चिंतता प्रदान करके आपका परिश्रम सफल करें...

❖❖❖

आओ, दिल्ली-अशोकविहार मंदिर के प्राण प.पू. गुरुजी के 82वें प्राकट्योत्सव का निदिध्यास करें...

मार्च महीने की 13 तारीख को प.पू. गुरुजी का प्राकट्य दिन होता है। 'गुणातीत कुनबा' प्रति वर्ष एकत्र होकर हर्षोल्लास से यह मनाता है। अबकी बार प.पू. गुरुजी का 82 वाँ प्राकट्योत्सव विशिष्ट था, क्योंकि दिल्ली मंदिर में श्री अक्षरपुरुषोत्तम महाराज सहित गुणातीत स्वरूपों की मूर्तिप्रतिष्ठा का यह 'रजत जयंती' वर्ष है। लेकिन, 14 फरवरी को **पुलवामा** में हमारे चालीस जवानों की शहादत से अत्यधिक दुःखी होकर, प.पू. गुरुजी ने **प्रगट ब्रह्मस्वरूप प.पू. हरिप्रसादस्वामीजी की आज्ञा** से **संतभगवंत प.पू. साहेबजी की निश्रा में** प्राकट्योत्सव को सादगी से मनाने की इच्छा प्रकट की।

11 मार्च की सायं सोखड़ा से **प.पू. दासस्वामीजी** फ्लाईट से दिल्ली आ गए थे। प.पू. गुरुजी के प्रति अंतर के लगाव के वश, तबियत नादुरस्त होने के बावजूद, 12 मार्च की सुबह फ्लाईट द्वारा **संतभगवंत प.पू. साहेबजी** भी साथी-सेवक मुक्तों के साथ पधारे। सोखड़ा से **प.पू. प्रेमस्वरूपस्वामीजी**, पवई से **प.पू. महेन्द्र बापु, प.पू. वशीभाई, प.पू. माधुरी बहन** एवं मुक्त भी आए। ट्रेन द्वारा 'पप्पाजी फार्म' और 'कंथारिया' से **पू. धर्मनंदनस्वामी, पू. अक्षरस्वरूपस्वामी** एवं गुणातीत ज्योत से **पू. इलेशभाई, पू. जीतूभाई, पू. माया बहन** भी अन्य मुक्तों के साथ उत्सव के लिए आए। यूँ दोपहर तक तो गुजरात, मुंबई, पंजाब, हरियाणा, उत्तरप्रदेश इत्यादि से सभी निजी मुक्त एकत्र हो गए थे।

इन मुक्तों के आगमन से प्रकृति भी आनंदित दिखती थी। मंदिर के प्रवेश द्वार के पास ही **'मूर्तिप्रतिष्ठा रजत जयंती'** वर्ष को प्रदर्शित करते हुए थर्मोकोल से 25 अंक बना करके गुरुहरि काकाजी की मूर्ति रखी गई थी।

प.पू. आनंदी दीदी की प्रेरणा से **पू. पुनीत मल्होत्रा** एवं **पू. शिवम्** ने 'मूर्तिप्रतिष्ठा रजत जयंती' वर्ष के उपलक्ष्य में पिछले 25 वर्षों में मनाए गए, प.पू. गुरुजी के प्राकट्योत्सवों की झलकियों की ऑडियो-वीडियो फुटेज

'तेरी वाणी में काकाजी...' तैयार की थी। इसमें प.पू. गुरुजी द्वारा स्वरूपों का महिमागान एवं गुणातीत ज्ञान के रहस्यों का समावेश है। सो, सायं 6:30 से 10:30 मंदिर के पीछे के परिसर में सभी ने प्रत्यक्ष स्वरूपों की निश्रा में स्क्रीन पर इसका दर्शन किया। तकरीबन चार घंटे यह वीडियो चली और नए-पुराने सभी मुक्त पुरानी स्मृतियों एवं प.पू. गुरुजी के मुख से निरंतर बहते ज्ञान प्रवाह में इतने खो गए कि किसी को समय का पता ही नहीं चला...

दूसरे दिन – **13 मार्च की सुबह** 9:30 से 11:00 मंदिर के 'कल्पवृक्ष' हॉल में महापूजा हुई। तत्पश्चात् मंदिर के प्रवेश द्वार पर की गई सजावट को सार्थक करने **संतभगवंत प.पू. साहेबजी** एवं **प.पू. गुरुजी** निराले दर्शन देते हुए काफ़ी देर तक झूले पर झूलते रहे।

सायं 6:00 बजे संतभगवंत प.पू. साहेबजी एवं प.पू. गुरुजी सुसज्जित बैटरी कार में बैठ कर सभा मंडप तक आए और फिर जब फूलों से बने गलीचे पर चलने लगे तब एक अद्भुत स्मृति दी। पू. अभिषेक एवं पू. मैत्रीशीलस्वामी का हाथ पकड़ कर प.पू. गुरुजी चल रहे थे कि यकायक पू. मैत्रीस्वामी का हाथ छोड़ कर, साथ चल रहे संतभगवंत प.पू. साहेबजी का हाथ पकड़ कर मंच पर आए।

उत्सव का शुभारंभ 'स्वामिनारायण' मंत्र की धुन एवं दिल्ली मंदिर से आत्मीयता से जुड़े सिंगर **पू. दीपक कुमारजी** एवं **पू. हृदय वर्मा** ने भजन गाकर किया। प्रासंगिक उद्‌बोधन की शुरुआत करते हुए मुंबई के **पू. रमेशभाई त्रिवेदी** ने शायराना अंदाज़ में प.पू. गुरुजी के प्राकट्य का मक़सद बताया और अपने भाव प्रकट किए। **नवसारी** के आत्मीय स्वजन एवं पुराने जोगी **पू. दिनकरभाई देसाई के सुपुत्र पू. पियुषभाई,** जो कि नवसारी के विधायक हैं, वे उत्सव के लिए ख़ास आए थे। सो, **पू. पुरी अंकल** ने उनका अभिवादन किया। तत्पश्चात् पू. पियुषभाई ने अपने पिताश्री पर गुणातीत स्वरूपों की हुई कृपादृष्टि का उल्लेख करते हुए प्रार्थना की। जगरांव के **पू. नरेन्द्रजी शर्मा** ने प.पू. गुरुजी में होती गुरुहरि काकाजी की दिव्य अनुभूति एवं किस प्रकार उन्होंने सभी मुक्तों को अपना संबंध देकर सुखी किया है – इन अनुभवों का वर्णन करते हुए प.पू. गुरुजी की दीर्घ आयु की कामना की।

मंदिर की मूर्तिप्रतिष्ठा का यह रजत जयंती वर्ष है, तो आज मंच की पृष्ठभूमि पर दिन व रात के दृश्य में हरियाले वृक्षों के साथ मंदिर के शिखर दर्शाए गए थे एवं भगवान स्वामिनारायण सहित सभी गुणातीत स्वरूपों का दर्शन हो रहा था। बड़े अक्षरों से लिखा था –

कोई भी संप्रदाय, संस्था या आश्रम जीवंत है – संत से; मंदिर के प्राण हैं – संत!

इस कनसॅप्ट का विवरण देते हुए **पू. राकेशभाई शाह** ने सभी की ओर से भावना प्रकट की –

कोटि धन्यवाद है भगवान स्वामिनारायण को जिन्होंने ये आशिष बरसाए कि मैं धरा पर अपने संतों द्वारा अखंड प्रगट रहूँगा और मूल अक्षरमूर्ति गुणातीतानंदस्वामीजी को मानव रूप में धरती पर लाकर उन्होंने आध्यात्मिक क्रांति कर दी। गुणातीत परंपरा में उनके तद्वत्‌भाव को पाए ब्रह्मस्वरूप संतों-मुक्तों के द्वारा वे आज भी प्रगट हैं। इसी गुणातीत परंपरा के गुरुहरि काकाजी महाराज ने दिल्ली में हमें प.पू. गुरुजी की बेमिसाल भेंट दी है।

अपने सभी भावों और संबंधियों को नज़रअंदाज करके,

भक्तों को ही अपने सच्चे सगे मानते हुए, वे सभी के सुख-दुःख में शामिल होकर जीते हैं

और

कुटुंबभाव के दिव्य सत्संग को अविरत फैला रहे हैं।
सुख के दिन हों या गम की अँधेरी रात, हमने उन्हें चौबीस घंटे हमेशा हमारे साथ ही पाया है
और
उनके साथ-सहारे से ही आज हमारा जीवन निश्चिंतता से भरा हुआ है।
इसी भावना को दर्शाने के लिए स्टेज की पृष्ठभूमि पर मंदिर के शिखर, दिन के उजाले और रात के अंधेरे में दिखाए गए हैं। इस मंदिर को, सत्संग को हरा-भरा और जीवंत ऐसे संतों ने ही बनाया है। अपने भजन, प्रार्थना एवं भक्तों से आत्मीयता और प्रीतिभरी परवरिश से ही उन्होंने प्रभु को, गुरुहरि काकाजी को राज़ी करने का मार्ग प्रशस्त किया है।
तो, एक निष्ठा से उनके इस परिश्रम और अभिप्राय में जुड़ जाएँ और साथी-मुक्तों की महिमा समझ कर, जैसे प.पू. गुरुजी अपनी आराध्य मूर्ति को राज़ी करने का एकमात्र उद्यम करते हैं, वैसा करने हम लग पड़ें और उनकी प्रसन्नता पा सकें – यही प्रार्थना है।

तत्पश्चात् **प.पू. महेन्द्र बापु** ने बखूबी माहात्म्य दर्शन कराया और युवाओं ने मंच पर विराजित प्रत्यक्ष स्वरूपों एवं आदरणीय संतों का हार अर्पण करके स्वागत किया। **संतभगवंत प.पू. साहेबजी** ने प.पू. गुरुजी का महिमागान करते हुए उत्तरभारत के दिव्य परिवार पर आशिष वर्षा की। तदोपरांत बहनों के विभाग में वडील बहनों को हार अर्पण करके स्वागत किया गया और सभी को **'कोल्ड कॉफी'** का प्रसाद बाँटा गया। इसी दौरान **पू. राकेशभाई** एवं **पू. दीपक कुमारजी** ने भजन प्रस्तुत किया। तत्पश्चात् **प.पू. दासस्वामीजी** एवं **प.पू. वशीभाई** ने प.पू. गुरुजी के प्रति अपने भाव व्यक्त किए। बाद में **पू. राकेशभाई, पू. डॉ. दिव्यांग** एवं गायकवृंद ने प्रार्थना भजन प्रस्तुत किया और...

सभी मुक्तों एवं केन्द्रों की ओर से **प.पू. गुरुजी** को '**हार** एवं **स्मृति भेंट**' अर्पण करने का कार्यक्रम प्रारंभ हुआ।

* सन् 1994 में 3 फरवरी को सभी प्रत्यक्ष स्वरूपों ने अपने वरद् हस्तों से इस मंदिर में श्री ठाकुरजी की मूर्तियों की प्राण प्रतिष्ठा की थी। मूर्ति प्रतिष्ठा हुए इस वर्ष 25 साल पूरे हुए।

  प.पू. गुरुजी अकसर कहते हैं – ***धर्म धर्मी के अधीन रहता है और मंदिर के प्राण संत होते हैं।***

  सो, दिल्ली गुणातीत समाज के सभी मुक्तों की भावना व्यक्त करते हुए, अक्षरज्योति की बहनों और भाभियों द्वारा बनाया विशिष्ट हार प.पू. गुरुजी को अर्पण किया गया। हार में रजत जयंती का संकेत करते हुए चाँदी से 25 लिखा हुआ था और उसे छोटी इलायची की लड़ियों से बाँध कर प्रार्थना करी थी –

  व्यंजन में इलायची डालने पर, वह अपनी खुश्बू देकर उसे स्वादिष्ट बनाती है, उसी प्रकार हे गुरुजी! आपने गुरुहरि काकाजी की सुवास-खुश्बू चहुँ ओर फैला कर हम सभी के जीवन को अमृतमय बनाया है। तो, आप हमें आशीर्वाद दें कि अब हम रजत जैसे शुद्धभाव से गुरुहरि काकाजी एवं आपकी सुवास फैलाते हो जाएँ- आपका परिचय बनें...

* इसी प्रकार, गुजरात – हरिधाम, अनुपम मिशन, गुणातीत ज्योत का प्रतिनिधित्व करते मुक्तों एवं अमदावाद, मुंबई, यू.पी. के हरिभक्तों ने हार एवं स्मृति भेंट अर्पण की व छोटे बच्चों ने कार्ड अर्पण करते हुए प्रार्थना की – ***जैसे आपके दिल में योगीबापा की मूर्ति बसी है, वैसे हमारे दिल में आपकी मूर्ति बसी रहे...***

पू. पुनीत मल्होत्रा एवं **पू. शिवम्** ने केवल सवा महीने की अवधि में **'तेरी वाणी में काकाजी...'** ऑडियो-वीडियो फुटेज तैयार करके सभी मुक्तों के अंतर की जो मूर्ति लूटी, उनकी इस सेवा से प्रसन्न होकर हारविधि के दौरान ही प.पू. गुरुजी ने दोनों को अपना हार पहनाया। तत्पश्चात् **प.पू. दासस्वामीजी** के साथ जोड़ में आए सोखड़ा के **पू. बॉसस्वामी** (धर्मकिशोरस्वामी) ने गुरुहरि काकाजी के अनुभव प्रसंग बताते हुए माहात्म्यगान किया।

गुणातीत ज्योत से **प.पू. हंसा दीदी** ने प.पू. गुरुजी के लिए ***'मैं हूँ किसकी घरवाली ए काकाश्रीना कैफ़नी...'*** जो भजन बनवा कर भिजवाया था, इसे **पू. इलेशभाई** ने **पू. राकेशभाई** के साथ प्रस्तुत किया। भजन के बाद **प.पू. कोठारी प्रेमस्वरूपस्वामीजी** ने आशिष प्रदान किया। तदोपरांत प.पू. गुरुजी के प्राकट्य दिन निमित्त **पू. राकेशभाई** द्वारा रचित नया भजन *'काकाजी तेरे, काकाजी का तू...'* **पू. डॉ. दिव्यांग** एवं **गायकवृंद** ने गाकर सभाखंड को इलेक्ट्रिफाय कर दिया। समय काफ़ी हो गया था, फिर भी मुमुक्षुजन तो अपनी गरज़ से बैठे ही थे। उत्सव के अंत में **प.पू. गुरुजी** ने आशीर्वाद दिया और विसर्जन प्रार्थना करके सभा की पूर्णाहुति हुई। प्रसाद लेकर सभी ने प्रस्थान किया।

इस बार उत्सव में कई मुक्त नहीं आ पाए। सो, उत्सव में प्राप्त हुए कृपाप्रसाद से वे सभी वंचित न रहें, इस हेतु 'भगवत् कृपा' के माध्यम से निम्न प्रस्तुत कर रहे हैं, ताकि स्वरूपों के आशीर्वाद एवं वडील संतों द्वारा मिले मार्गदर्शन से जीवन की धन्यता का एहसास करें...

प.पू. महेन्द्र बापु (पवई)

... आज गुरुजी का जन्मदिन और सिल्वर ज्युबीली ऑफ धीस टेम्पल। मैंने गुरुजी का संबंध काकाजी के साथ देखा है। वर्षों पहले काकाजी ने इंग्लिश पुस्तक 'एप्लाईड ब्रह्मज्ञान' पब्लिश करवा कर, अमेरिका में रीलीज़ की थी। उसकी प्रीफेस लिखनी थी। काकाजी ने जो पुस्तक लिखी हो, उसका प्रीफेस कौन लिख सकता है ? वह तो वही लिख सकता था जो उस लेवल को समझता हो। उस समय हरिप्रसादस्वामीजी अमेरिका से लौट आए थे, लेकिन जूनागढ़ में मूल अक्षरमूर्ति गुणातीतानंदस्वामीजी का द्विशताब्दी महोत्सव मनाने गए थे। तब कॉम्युनीकेशन के अधिक साधन नहीं थे। सो, **काकाजी** ने खुद प्रीफेस लिखी और उसके नीचे नाम लिखा– ***दादु मास्टर्स सेवक इन अक्षरधाम–मुकुंदजीवनस्वामी, गुरुज्ञानजीवनस्वामी एन्ड महेन्द्र शाह-बापु!*** सब जानते हैं कि हम काकाजी के दीवाने हैं। उनसे हमारा संबंध जन्म-जन्म का होगा।

आज यहाँ भी कई भक्तों को मैं देखता हूँ, तो ऐसा लगता है कि गुरुजी के साथ उनका संबंध जन्म-जन्म का है। हम सब साक्षी हैं कि **यह मंदिर पूरा बनाने में गुरुजी ने कठिन तपस्या की है। फाईनेन्शियल स्कॅर्सिटी भी फेस करी है। यहाँ कोई गुजराती नहीं था, लेकिन सबसे गौरव की बात है कि उत्तरभारत व पंजाब से सभी लोगों ने एक भावना से सहयोग दिया है। सभी फील करते हैं कि यह अपना मंदिर है... यहाँ मंदिर**

का कण-कण, एक-एक पत्थर 'काकाजी-काकाजी' बोलता है... सबके जीवन में काकाजी निमित्त बने हैं और गुरुजी भी कभी काकाजी को भूले नहीं हैं।

कल **'तेरी वाणी में काकाजी...' में हमने जो सुना, उससे बढ़ कर कोई ज्ञान नहीं है।** गुरुजी से प्रार्थना है कि–सी डी या किसी भी अतिरिक्त माध्यम से, इसे पुस्तक के रूप में ज़रूर पब्लिश करना।

गुरुजी जैसे अंदर हैं, वैसे ही काकाजी के पास रहे और गुरुजी ऐसा बनें, इसलिए काकाजी भी उनके साथ ऐसा ही वर्ते। **'ब्रह्मप्रवाह'** पुस्तक में काकाजी ने अपनेपन से गुरुजी को जो लॅटर लिखे हैं, वे मैं बार-बार पढ़ता रहता हूँ। काकाजी ने दिल खोल कर उन्हें अपनी बात बताई है, 'गुणातीत ज्ञान' का संदेश दिया हुआ है। **गुरुजी वैसे बड़े शरारती हैं, लेकिन बहुत विचक्षण हैं। ही इज़ वेरी सीरियस-वेरी गंभीर एबाउट साधना...** उन्होंने काकाजी के साथ बाप-बेटे का संबंध किया है। गुरु-शिष्य का संबंध रखते हुए निष्कपटभाव से दिल खोल कर बात करते थे और काकाजी ने भी दिल खोल कर उन्हें ज्ञान दिया है...

बापा, काकाजी, पप्पाजी, स्वामीजी जैसे सच्चे गुरु जब हमें मिले हैं, तो हमारी जिंदगी में कितने भी उतार-चढ़ाव आएँ, लेकिन वे हमें ऊँचाई पर पहुँचा ही देंगे। हम देखते हैं कि **गुरुजी आज सच में काकाजी की मिसाल हैं।** काकाजी इतने उदार थे कि उन्होंने **कांतिकाका के जन्मदिन पर** आशीर्वाद लिखा था कि मैं तो बापा से एक ही प्रार्थना करता हूँ कि–

आपने जिन्हें साधु बनाया है और आपने उनके लिए जो संकल्प किया है कि सभी की भगतजी महाराज, शास्त्रीजी महाराज जैसी स्थिति करानी है; वो ब्राह्मीस्थिति प्राप्त करने में उनकी जो भी कसर हो, वो मेरे हिस्से में आए, उनकी कसर मैं अपनी मानूँ और उनके लिए प्रार्थना करूँ। उसका कोई दोष नज़र न आए।

हम देख सकते हैं कि **काकाजी के 'हरा अनुग्रह' के कारण हम यहाँ हैं...**

साधना की अंतिम अवस्था सत्, चित्त, आनंद... **मैं गुरुजी के पास रहता हूँ, तो उनकी नज़र में हर पल काकाजी नज़र आते हैं।** उनकी जो मस्ती, जो आनंद...

पंचयज्ञ पुस्तक में काकाजी ने लिखा है कि तुम्हारा कोई साधन हमें नहीं पहुँचेगा। किसी भी तरह हमें राज़ी करके हमारी लिस्ट में आ जाओ, वही तुम्हारी साधना है। बाकी, तुम साधना क्या करोगे? **धी डिवाईन रिलेशनशिप विथ धी मास्टर इज़ धी मोस्ट इम्पोर्टन्ट थिंग।** गुरुजी की विशिष्टता यह है कि काकाजी, पप्पाजी और बा के अंदर उन्होंने एक ही स्वरूप देखा और तीनों की महिमा जानी कि यह हमारी नींव की ईंट है। आज हमें शिखर दिखाई देते हैं, उनकी पूजा करते हैं। लेकिन **नींव की ईंट को हम कभी भी भूल नहीं सकते। यह बात गुरुजी की रग-रग में व्याप्त है।** सबका उन पर आशीर्वाद है। इसलिए मैं कहता हूँ कि **गुरुजी हमारे गुणातीत समाज की एक मिसाल हैं और हमारे आदर्श हैं।** उनके साथ हमें ऐसा डिवाईन रिलेशनशिप करना है...

हम संस्थारूप, क्रियारूप हो जाते हैं, डिपार्टमेन्ट रूप हो जाते हैं। यह 'भक्ति' ज़रूर है पर वो कितनी ही भक्ति करो, वह निर्गुण है लेकिन निष्काम नहीं है। निष्काम भक्ति यानि–हमें प्रभु में खो जाना है। हमें वही करना और बनना है जो प्रभु-संत चाहें। कभी भी आनंद न जाए। बस उनकी ही एक अपेक्षा रखनी है। हे रसघन मूर्ति! बस आप

में ही वृत्ति रहे, ऐसी हमारी वृत्ति कर देना... **हंसा दीदी** का बनाया एक भजन है–
स्वभावरहित एक तू पुरुष, अन्यों के स्वभाव तो साधन। स्वतंत्र कोई वर्त नहीं सकता। सबका संचालन करता तू... सब तो निर्दोष हैं।
निर्दोषबुद्धि यानि क्या? काकाजी के पास –'नो कम्पल्ज़न!' ही नेवर कम्पेल्ड एनी बडी टु डू समथिंग। ही ऑलवेज़ लव्ड एन्ड प्रीच्ड ऑल, टु इरेडिकेट जड़ संस्कार...

यहाँ गुरुजी के पास भी साधना के लिए कोई तप-त्याग नहीं करना है। बस, खाओ-पिओ, आनंद करो। गुरुजी के जन्मदिन पर कॉफी भी मिलती है... तो, आनंद करो, भई आनंद करो। सच्चिदानंद आत्मा की यह अंतिम भूमिका है। डु नॉट पीप इन अधर्स लाइफ। साहेब का भी मंत्र है–*थिंक पॉज़ीटिव, रेस्ट विल फॉलो।* अभी भी क्रिया-कांड, ज्ञान, वैराग्य, भक्ति सब हैं, लेकिन उनका मूल्यांकन बदल गया है। हमें कॉन्सियसनेस से सत्संग करना है। सबकॉन्सियसली हमें एवर-एलर्ट रहना है। लुक एवरीबॅडी विथ दी आईज़ ऑफ इनोसेन्स। **काकाजी हमेशा गुरुजी के पक्ष में रहे। मैत्रीभाव का काकाजी का सिद्धांत गुरुजी ने सिद्ध किया।**

काकाजी जब धाम में गए, तो **मल्कानी साहेब** ने गुरुजी का साथ दिया। मल्कानी साहेब ने गुरुजी के साथ मैत्री रखी। ऐसा कभी सोच सकते हैं कि कोई करोड़पति सेठ सत्संग करे? लेकिन, आज गुरुजी से संबंध करके, उनसे डिवाईन रिलेशनशिप करके वे खुद ब्रह्मरुप बन गए हैं। एक बार वे मुंबई में नरीमान पॉईंट के ऑबिरोय हॉटल में ठहरे थे और पप्पाजी से मिलने के लिए बोरीवली जाना था। रास्ता मालूम न होने के कारण उन्होंने मुझे साथ चलने के लिए कहा। मैं उनके साथ ताड़देव से गाड़ी में बैठा, तो बोरीवली तक वे धुन करते रहे। मुँह से 'स्वामिनारायण' मंत्र बोल रहे थे। उनके साथ जो मेनेजर इत्यादि थे, वे बोले कि साहब के अंदर कितना चेईन्ज है कि जब भी उनके साथ गाड़ी में बैठो तो धुन ही चलती है।

मैत्रीभाव, कुटुंबभाव और आत्मीयता का सिद्धांत गुरुजी ने सबके साथ रखा है। गढ़डा अंत्य. 11 'सीताजी जैसी समझदारी का' वचनामृत बापा को प्रिय था। कैसी भी परिस्थिति हो, लेकिन हमेशा गुण लेना। गुरुजी हमेशा आनंद कराते हैं। हम क्या साधना करेंगे, हमारी कौन-सी साधना प्रभु को पहुँचेगी? **दासस्वामी** को मालूम है कि रात को काकाजी कहते– *चलो, हम ब्रीज खेलेंगे।* कोई साधु ब्रीज खेलने की बात करेगा क्या? दरअसल, हमें मानसिक भूमिका में से बाहर निकालने की यह गेइम है। फर्स्ट यू हॅव टु प्ले बेस्ट, धेन यू अन्डरस्टेन्ड यॉर पार्टनर। मीन्स आप अपने पार्टनर को समझो और सारा बोझ सिर पर रखे बिना, भगवान पर डाल दो। ऐसे ही शनिवार को सत्संग सभा के बाद, गुरुजी के पास सब इकट्ठे होते हैं। फिर गुरुजी किसी न किसी से कहेंगे कि कोई नया जोक-चुटकुला सुनाओ और सब आनंदोब्रह्म करते हैं। हमें अपने आप में से कौन बाहर निकालेगा? काकाजी इस तरह से निकालते थे...

काकाजी के ज़माने के किसी भी हरिभक्त को गुरुजी भूले नहीं हैं। सबको अपनापन देकर 'काकाजी तो अब भी हैं यहीं'– ऐसी प्रतीति करा दी है। सबको आनंद-मंगल कराते हैं। गुरुजी, आपके चरणों में हम यही प्रार्थना करें कि जिस प्रकार आपने अपना बोझ काकाजी के सिर पर दे दिया, ऐसे हम भी जिएँ। कल हमने गुरुजी के जो प्रवचन देखे और सुने, वे सब अंतर्दृष्टि के हैं। इन्ट्रोस्पेक्शन ही जीवन है। **यदि दिव्य जीवन जीना है, तो**

पल-पल अपने भीतर जागरूक होकर जीना है...

गुरुजी की तबियत अच्छी रहे, उसके लिए यहाँ के भक्त भी बहुत कॅयर करते हैं। आप सबको धन्यवाद देता हूँ। **गुरुजी के प्रति प्यार ही हमारी साधना है।** मैंने हरिन्द्र दवे की पुस्तक 'माधव क्यां य नथी' पढ़ी थी। पर **यहाँ जब आते हैं, तो लगता है कि काकाजी कहाँ नहीं हैं? बस–'काकाजी-काकाजी...'** स्वामी सेवकभाव से प्रार्थना करना ही हमारा जीवन है। गुरुजी को ही आदर्श रख कर, हम गुरुजी के लिए ऐसा जीवन जी सकें, ऐसी सब साक्षात् स्वरूपों के चरणों में प्रार्थना।

संतभगवंत प.पू. साहेबजी

...बहुत दिव्य दिन है। प.पू. गुरुजी का प्रागट्य पर्व और अक्षरपुरुषोत्तम मंदिर **मूर्तियों की प्रतिष्ठा** के 25 साल पूरे हो रहे हैं। **रजत जयंती महोत्सव !**

वैसे तो गुरुजी को दिल्ली में आए 50 साल पूरे हुए। 1969 में काकाजी-पप्पाजी की आज्ञा से कार्य का प्रारंभ करने के लिए आशीर्वाद लेकर दिल्ली आए थे। दिल्लीवासियों का बहुत बड़ा सौभाग्य है कि ऐसे बड़े साधु की भेंट योगीजी महाराज, काकाजी, पप्पाजी ने हमको दी।

30 साल का एक युवा (साधु) दिल्ली आ पहुँचा और 25 साल तक बहुत तपस्या की। हम सब उसके साक्षी हैं। शुरुआत में गुरुजी के साथ प्रेमस्वामी, हमारा वल्लभदास, अरुणभाई, विज्ञानस्वामी, बैरिस्टर सब आते थे। वे आकर उनके संस्मरण की हमें जो बातें करते थे, उससे लगता था कि रीयली इधर आकर तपस्या ही करनी है। कोई सुविधा नहीं थी, भक्त समाज भी नहीं था।

इससे याद आता है कि **'स्वामिनारायण भगवान'** वैसे तो घूमते रहते थे। संत बनाए-बहुत भक्त लोग थे, पर कोई स्थान नहीं बनाया था। दादाखाचर के दरबार में रहते थे। महाराज ने बीमारी ग्रहण की, तो **सद्‌गुरु मुक्तानंदस्वामी** को बहुत चिंता हो रही थी। उन्होंने भगवान से प्रार्थना की कि सामान्य कोई साधु-बाबा हो, वो भी अपने मस्ज़िद, मठ का निर्माण करते हैं और अपने भक्तों के लिए आश्रय स्थान बनाते हैं। आप सर्वोपरि सर्व अवतारों के अवतारी पुरुषोत्तमनारायण खुद इस लोक में कृपा करके आए हैं। इतने संत बनाए और इतने भक्त हैं, पर आपने उनके लिए कुछ नहीं किया। आप हो तब तक हम सब आपसे जुड़े हुए हैं। किसी सुविधा की हमें ज़रूरत ही नहीं। **आपका दर्शन ही हमारे लिए सब सुविधा है। आपका सान्निध्य ही हमारे जीवन का आनंद है। आपकी आज्ञा ही हमारे जीवन की प्रवृत्ति है।** लेकिन, जब आप स्थूल देह में नहीं रहेंगे, तो हम सब क्या करेंगे? तब **स्वामिनारायण भगवान** उठकर बैठे और मुक्तानंदस्वामी पर प्रसन्न होकर बोले–

आपका हृदय माँ का है, भक्तों-संतों के प्रति वात्सल्यभाव आपकी प्रार्थना में दिखाई देता है, तो आज हम संकल्प करते हैं।

यूँ भगवान स्वामिनारायण ने मंदिरों व मूर्तियों का संकल्प किया। मूर्तियों में प्राण प्रतिष्ठा की और साधु-संत बनाने का संकल्प किया। उनमें माहात्म्य का सिंचन करें, ऐसे शास्त्र बनाने का संकल्प किया। भक्तों को तैयार करने का संकल्प किया। महाराज ने ऐसे 5-6 संकल्प किए। महाराज ने अपनी हयात में 6 मंदिर बनाए।

जूनागढ़ मंदिर उसमें से एक है। **गुणातीतानंदस्वामी** को उन्होंने आज्ञा की कि आप जूनागढ़ जाकर मंदिर

बनाओ। **आमतौर पर किसी को कोई काम के लिए भेजते हैं, तो उसके लिए सुविधा, उसके लिए पैसा, चीज़, वस्तु, पदार्थ, मॅन पावर सब साथ में देते हैं। पर, स्वामिनारायण भगवान ने तो उन्हें सिर्फ आज्ञा करी कि आप जूनागढ़ जाओ और वहाँ मंदिर बनाओ।** जूनागढ़ में मुस्लिम राज था, विपरीत परिस्थिति थी। बेशक, नवाब को गुणातीतानंदस्वामी के प्रति प्रेम था, पर वहाँ शिवजी के उपासक ब्राह्मण थे। ऐसे माहौल में मंदिर बनाना बहुत कठिन था, पैसे भी नहीं थे। भक्त समुदाय भी इतना नहीं था। **फिर भी गुणातीत ने अपनी गुणातीत अवस्था का, अपने कार्य द्वारा सबको दर्शन करवाया। शून्य में से सर्जन किया। बड़ा मंदिर बनाया और भक्त समुदाय तैयार किया।** स्वामिनारायण भगवान को सब भगवान मानते थे, उनकी पूजा करते थे। स्वामिनारायण भगवान का ऐश्वर्य प्रताप, समाधि प्रकरण-चमत्कार सुनकर लाखों लोग उनके भक्त बने थे। **गुणातीतानंदस्वामी ने सबके हृदय में स्वामिनारायण भगवान के प्रति 'सर्वोपरिभाव' स्थापित किया।** निष्ठावान भक्त समुदाय का सर्जन किया। इस कार्य से **सबको ख्याल आया कि ये स्वामी सामान्य साधु नहीं हैं। गुणातीतभाव में रहकर काम करने वाले साधु हैं, जिनके द्वारा भगवान काम करते हैं।**

इसी तरह काकाजी ने गुरुजी को आज्ञा करी थी कि आप दिल्ली जाओ और वहाँ रहो। हम देखते हैं कि गुरुजी की तपस्या, साधुता, प्रभु के प्रति निष्ठा, प्रभु को राज़ी करने की उनकी हृदय में जो भावना थी, उससे भगवान उनके वश थे, तो **कितना अद्‌भुत मंदिर का सर्जन करके उन्होंने हमें अपनी गुणातीत अवस्था का दर्शन करवाया।**

शास्त्रीजी महाराज ने अपने समय में 5 मंदिर बनवाए। बहुत संत-भक्त लोग थे, पर **अमदावाद** में मंदिर नहीं था। पहले गुरुजी जैसे कोठी में रहते थे, **शाहीबाग** में ऐसा ही बंगला था। **बाबुभाई कोठारी** नाम के बहुत बुद्धिमान अमदावाद मंदिर का संचालन करते थे। शास्त्रीजी महाराज ने बीमारी ग्रहण करी थी; तो उन्होंने कहा–स्वामीजी, आपने इतने संत बनाये, इतने मंदिरों का निर्माण किया, इतना भक्त समुदाय तैयार किया। पर, आपके बाद इन सबकी देखभाल कौन करेगा? आपका कोई वारिसदार नहीं बनाया। तो, सब देखरेख कौन करेगा ? तब **शास्त्रीजी महाराज ने बोला–** ***योगीजी महाराज हैं।*** बाबुभाई कोठारी सरप्राइज़ हो गए कि योगीजी महाराज आपके वारिसदार बनेंगे! उन्होंने मन में सोचा होगा कि योगीजी महाराज को तो कुछ आता नहीं हैं, हिसाब करना-समझना भी नहीं आता है और किसी को डांट भी नहीं सकते। ये किस तरह से संभालेंगे ? अपने गुरु के प्रति उन्हें शंका हो गई। शास्त्रीजी महाराज तो बहुत प्रतिभाशाली हैं। उनकी हाज़िरी से ही काम होता है। दूसरी ओर–योगीजी महाराज ने इतना रंकभाव, दासत्वभाव धारण किया था कि सभी सोचते थे कि ये कैसे करेंगे ? तब शास्त्रीजी महाराज ने कहा था–देश का व्यवहार करना है, तो एक लिमिटेड कंपनी भी ठीक तरह से चलाती है। घर का काम-काज चलाना है, तो एड्मिनिस्ट्रेटिव पावर वाला व्यक्ति कर सकता है। लेकिन, **स्पीरिच्युअल काम करना हो, आध्यात्मिकता प्रगटानी हो और आध्यात्मिक समाज बनाना है, तो साधु की ज़रूरत पड़ती है। योगीजी महाराज ऐसे साधु हैं।** वे ही काम करेंगे; उन्हें कुछ करना नहीं पड़ेगा, सब अपने आप होता चला जाएगा।

ऐसा ही गुरुजी ने इधर आकर किया है और योगीजी महाराज की प्रसन्नता प्राप्त की। गुरुजी के

जीवन के कई प्रसंग हम जानते हैं। योगीजी महाराज की आज्ञा और दादुकाका व बा के प्रेम से गुरुजी साधु बने। हम जानते हैं वे बहुत चंचल थे। एक जगह ज़्यादा समय बैठते भी नहीं थे। आज हम सबने सुना कि बैठकर बातें सुनना, स्ट्रेइट फॉरवर्ड रहना ये इनमें क्वालिफिकेशन्स हैं। लेकिन, आध्यात्मिकता में एक ही क्वालिफिकेशन काम आती है कि प्रभु की प्रसन्नता प्राप्त करना। प्रभु के साथ जुड़ जाना, प्रभु की आज्ञा में रहना इसमें सब आ जाता है। युवा अवस्था में गुरुजी कैसे भी थे, लेकिन काकाजी के प्रति ऐसा प्रेम-भाव था कि उनका मन-बुद्धि कन्विन्स नहीं होते थे, तब भी योगीजी महाराज के कार्य में 51 साधु के साथ साधु बन कर, योगीजी महाराज की प्रसन्नता के वे पात्र बन गए। दादर मंदिर में उनका कारोबार देखो। आप सबको मालूम है, फिर भी एक प्रसंग बताता हूँ– ...दादर मंदिर में एक संत को कॉफी पीने की आदत थी और नेस्केफ कॉफी बहुत फेमस थी। उस टाइम परदेश से आती थी। तो, वे किसी हरिभक्त से कॉफी का डिब्बा मंगवाते थे और अपने कबाट में ताला लगा कर उसमें रख देते थे। सुबह उठकर अकेले पीते थे। गुरुजी को हुआ कि ये अकेले कैसे पी सकते हैं? तो, हमारे **अर्जुनसिंह** तब **शांतिप्रियस्वामी** थे। ताला खोलने में वे मास्टर थे। गुरुजी ने उनसे बात करके रात को उस साधु के कबाट का ताला खुलवा कर, कॉफी निकाल कर, टीन में हाथ धोने की मिट्टी भर दी। मिट्टी का कलर भी नेस्केफ जैसा होता है। वो संत सुबह उठे और दूध में डाला तो उन्हें हुआ कि ये क्या हो गया? गुरुजी के प्रकरण ऐसे हैं।

सारा दिन भगवान के सामने माला फिराता हो, कोई सीधा-सादा हो उसे हम कहते हैं कि अच्छा साधु है। हमको मालूम भी नहीं है कि कौन अच्छा है, कौन नहीं है। शास्त्रीजी महाराज के समय में मंदिरों का काम चलता था। संतों की संख्या बहुत कम थी, मॅन पावर भी कम था, फाइनेन्शियली भी बहुत तकलीफ थी। उस समय संतों ने बहुत सेवा की। श्रम यज्ञ चलता था, मंदिर के काम में सब संत जुटे हुए थे। शास्त्रीजी महाराज अचानक सारंगपुर आए और काम देखने के लिए गए। सब संत तो काम कर रहे थे, लेकिन दो संत नहीं थे। तो, शास्त्रीजी महाराज ने पूछा– *वो दो साधु कहाँ हैं?* किसी ने बताया – *स्वामी, वो मंदिर में ध्यान में बैठे हैं।* कइयों को ऐसा होता है कि हम तो साधु हुए हैं, हमारा काम प्रार्थना करना है – माला फिराना है। पर, वो अपनी मर्जी से ध्यान कर रहे थे। शास्त्रीजी महाराज वहाँ गए और पीछे से एक लात लगा दी और बोले – *किसके बाप का ध्यान कर रहे हो? तेरा बाप जिससे राज़ी होगा, वो काम कर। वो ही तेरा ध्यान; ये ध्यान नहीं कहलाएगा।* देखो, **प्रगट गुरु की परंपरा का यह कायज़ा है।** एक बात समझना, शास्त्रीजी महाराज ने अक्षरपुरुषोत्तम की शुद्ध उपासना स्थापित करके हम सबको बताया– *'तप, व्रत कुछ भी करो, इससे आपका परिवर्तन नहीं होगा।'*

जगत में वाहवाही ज़रूर होगी। **गुरुजी** के प्रवचन में हमने कल सुना की द्रोण, भीष्म, युधिष्ठिर जैसों का ब्रह्मचर्य, ज्ञान, सत्यनिष्ठा जैसे सद्गुणों से बोलबाला था। पर, अर्जुन ने काम किया भगवान की प्रसन्नता के लिए। उन्होंने भगवान के प्रति शरणागतभाव और भगवान की आज्ञा से हिंसा की। देखो, स्वामिनारायण भगवान ने **नरनारायण देव** का पहला मंदिर अमदावाद में बनाया, जिसमें अर्जुन और कृष्ण की मूर्ति स्थापित की। शास्त्रीजी महाराज ने बताया की मानव सुख, शांति और आनंद के लिए इतना तप, व्रत, त्याग करता है, लेकिन समझता नहीं है कि शांति भीतर में स्थापित तब होगी, जब प्रभु की प्रसन्नता प्राप्त होगी। प्रभु की प्रसन्नता कैसे मिलती है? शास्त्रीजी महाराज ने बताया – *भगवान को साकार और प्रगट मानो।* कहाँ प्रगट हैं? ऐसे साधु द्वारा 'प्रगट' हैं।

साधु को 'प्रगट स्वरूप' मानो और उनके साथ जुड़ जाओ, उनकी आज्ञा में रहो। भीतर में शांति और सुख अपने आप प्रगटता जाएगा।

वो गुरुजी ने किया। उन्होंने योगीजी महाराज को साकार प्रभु का स्वरूप माना। योगीजी महाराज ने कहा– *महंतस्वामी की आज्ञा में रहो।* तो, योगीजी रूप मान कर महंतस्वामी की आज्ञा में रहे। काकाजी से जुड़े हुए थे, काकाजी की आज्ञा से साधु हुए, महंतस्वामी के साथ जुड़े और महंतस्वामी के पास से 1966 में जब आए, तब हरिप्रसादस्वामी को भी योगीजी महाराज का स्वरूप मानकर उनकी आज्ञा में रहे।

मैं साक्षी हूँ कि उन्हें दिल्ली नहीं आना था, लेकिन काकाजी की आज्ञा से आए... यहाँ माहौल ऐसा कि कोई भी आता है, वो सफोकेट हो जाता है। गुरुजी की तो बिलकुल इच्छा नहीं रहती थी, लेकिन उनकी एक ही ख़्वाहिश थी कि योगीजी महाराज, गुरुदेव काकाजी को राज़ी करना और उनकी आज्ञा से आए। ये बहुत बड़ी तपस्या है। **प्रगट की उपासना में तपस्या की डॅफीनेशन बदल जाती है। अपने गुरु की आज्ञा में रहो, उससे बड़ी कोई तपस्या नहीं है।** तो, गुरुजी इधर आकर रहे, हम सबके लिए तपस्या की –दिल्लीवासियों और उत्तरभारत के जो लोग हैं, उनके लिए की।

स्वामिनारायण भगवान कई जगह घूमते-घूमते गुजरात आए थे। इनकी दृष्टि में आए सभी चैतन्यों का पोषण करके, उन सबको प्रभु में जोड़कर, उन्हें सुखी करना उनका संकल्प है।

उस संकल्प का मूर्तिमान स्वरूप बनकर गुरुजी इधर आए। 25 साल तक तपस्या की। हमें अपनी साधुता का दर्शन कराया। कोई सुविधा नहीं थी, कोई भक्त लोग नहीं थे, कोई आता-जाता नहीं था। दादुकाका बार-बार आकर उनके साथ रहे। गुरुजी को काकाजी के प्रति प्रीति थी और योगीजी महाराज, महंतस्वामी, हरिप्रसादस्वामी के प्रति जो भाव-प्रेम था, तो अपने आप काम होने लगा। जो नहीं हो सकता है, वो वस्तु शक्य बन गई– इतने बड़े मंदिर के रूप में ! मुट्ठीभर भक्तों का साथ लिया।

धन से **मल्कानी साहेब** ने पूरा सपोर्ट दिया, सो उन्हें धन्यवाद है। **मल्कानी भी काकाजी के संकल्प से आए हुए भक्तराज हैं।** भारत माता मंदिर के दर्शन के लिए काकाजी के साथ गुरुजी गए थे। वहाँ कम्पाउंड में बारडोली की शुगर फॅक्ट्री के मॅनेजिंग डायरेक्टर दायारामभाई की मूर्ति है। उनका जब हीरक महोत्सव मनाया, तो एक फार्मर ने उन्हें 60 लाख रुपये की थैली दी थी। उसमें से 11 लाख रुपये उन्होंने 'भारत माता मंदिर' में दिए थे। वहाँ उनका स्टेच्यु लगा था और नीचे लिखा था कि दयारामभाई ने 11 लाख रुपये दिए हैं। वह देख कर **गुरुजी** ने काकाजी से कहा–

काकाजी आप कहते हैं कि सर्वोपरि भगवान भगवान हमें मिले हैं और यहाँ इन्हें भगवान भी नहीं मिले हैं, तब भी 11 लाख देने वाले मिल जाता है और हमें ऐसा कोई मिलता ही नहीं है।

काकाजी ने कहा–

राजा! तुमने मुझे चॅलेंज किया है। दयारामभाई ने 11 लाख रुपये दिए थे, लेकिन तुझे इससे कई ज़्यादा देने वाला मिलेगा और वह अपना स्टेच्यु भी नहीं लगवाएगा।

यूँ, उनके संकल्प से मल्कानी अंकल ने अपना स्टेच्यु नहीं रखवाया है, लेकिन अपने आपको समर्पित कर दिया है।

दयारामभाई को ऐसा सत्संग नहीं हुआ, बल्कि मल्कानी अंकल और आंटी को तो पूरा मूर्तिरूप बना दिया। **ये गुरुजी का प्रभाव है।**

गुणातीतानंदस्वामी, योगीबापा-शास्त्रीजी महाराज और काकाजी-पप्पाजी की बातें सुनकर कइयों को होता होगा कि उनका हमने दर्शन नहीं किया। पर, ऐसा ही दर्शन गुरुजी में करना वही हमारी साधना है। **मानवरूप में भगवान के स्वरूप के प्रति जो प्रेमभाव होता है, वही चैतन्य को जन्म-मरण के चक्कर में से निकालता है।** हम देखते हैं कि दीये से दीया जलता है। जलते हुए दीये के साथ टच होने से ही बाती में दीया प्रगट होता है। इस तरह महाराज से गुणातीतानंदस्वामी, गोपालानंदस्वामी, भगतजी महाराज, जागास्वामी, अदाश्री, शास्त्रीजी महाराज, योगीजी महाराज, काकाजी, पप्पाजी, प्रमुखस्वामी, महंतस्वामी, हरिप्रसादस्वामी इन सबने हमको प्रगट रूप में दीया दिया है। उनके साथ जुड़ जाने से हमारे भीतर का दीया जल जाएगा और हम सुखी हो जाएँगे।

गुरुजी के 50 साल का पूरा इतिहास देखो तो लगता है कि वे सामान्य साधु नहीं हैं। भगवादारी सब संत होते हैं, लेकिन इनमें ये अनोखे हैं। अनोखा क्या ? गुणातीतभाव को प्राप्त किए हुए हैं। गुणातीतभाव को प्राप्त किए साधु मिलें, वो भगवान की बहुत बड़ी कृपा मानी जाए। **गुणातीतानंदस्वामी** ने बोला है–

चरवाहा खुश हो, तो 5-25 भेड़, बकरी, गाय दे दे, किसान खुश हो तो धान-फ्रूट दे, पैसे वाला राज़ी हो, तो पैसा देता है। ***यदि भगवान राज़ी हों तो ऐसे साधु की गोद दें और उन्हें पहचान सकें ऐसा बुद्धियोग देंगे।***

दिल्ली वासियों को स्वामिनारायण भगवन ने दोनों चीज़ दी हैं। ऐसे साधु की भेंट दी है और उनका माहात्म्य समझें ऐसी सब में बुद्धि भी दी है। तो, हम निहाल हो गए। ऐसे गुरुजी के प्रागट्य पर्व को 82 साल हुए, लेकिन गुरुजी की हेल्थ देखकर अच्छा लगता है। सबको बहुत आनंद कराते हैं। उनके पास बैठना, उनका दर्शन करना वही साधना। दूसरी क्या साधना है ? **गुरुजी के साथ जुड़े रहो, गुरुजी की मूर्ति का चिंतन करते रहो–भीतर का सब जल जाएगा।**

एक बात करके मैं पूरा करता हूँ, हम सौराष्ट्र गए थे। फणेणी गाँव है, जहाँ 218 साल पहले स्वामिनारायण भगवान ने 'स्वामिनारायण मंत्र' का उद्घोष किया था। इस मंत्र की द्विशताब्दी मनाने के लिए हमने वहाँ पर शिविर रखी थी। नज़दीक ही धोराजी टाउन में हम ठहरे थे। जिस डॉक्टर के घर में ठहरे थे, वे तो बोलते थे– *यहाँ पानी बहुत गंदा आता है, प्यॉर नहीं होता है।* तो, मैंने पूछा– *आप जो हमको पानी देते हो, वो प्यॉर और ट्रांस्पॅरन्ट है ; तो कहीं बाहर से लाते हो?* उन्होंने बताया– *नहीं, वही पानी है।* सो मैंने पूछा–*यह साफ़ कैसे हुआ ?* वे बोले – *जितना चाहिए उतना पानी घड़े में पूरे दिन के लिए भर कर, शाम को उसमें फिटकरी का एक टुकड़ा डाल कर सो जाते हैं। सुबह तक सारा कचरा नीचे बैठ जाता है और ऊपर प्यॉर पानी आ जाता है। वो ऊपर का पानी निकाल कर, गर्म करके पीते हैं।* **लोग पानी में से कचरा निकालने का परिश्रम करते है; हठ-मान-ईर्ष्या, काम-क्रोध-लोभ टालने के और अहंकार को मिटाने के लिए लोग साधना करते हैं क्या ?** समझ में ही नहीं आता कि क्या दोष है, क्या अहंकार है ? लेकिन **जैसे फिटकरी रखने से पानी प्यॉर हो गया, ऐसे ही साधु के मनन-चिंतन में रहोगे, जुड़े रहोगे तो सब कचरा साफ़ हो जाएगा। साफ़ करने के लिए कोई साधना करने की ज़रूरत नहीं पड़ेगी। यही प्रगट उपासना की बलिहारी है।**

ऐसे प्रगट साधु मिले तो धन्य हो गए। बापु ने बोला कि आनंद करो, भई आनंद करो। आनंद तभी हो सकता है, जब ऐसे साधु के साथ जुड़ोगे, वर्ना आनंद नहीं रहेगा। सो, ऐसे साधु से जुड़े रहो, उसकी स्मृति में रहो। **दिल्लीवासियों को मैं बहुत धन्यवाद देता हूँ कि पूरा समाज – बहन हो या भाई हो – सबको अपने गुरु के प्रति दर्शन का ऐसा भाव है, लगन है, स्मृति है।** जहाँ भी जाओ गुरुजी-गुरुजी-गुरुजी! यही साधना है। **श्रेष्ठ साधना आप सब कर रहे हो।** गुरुजी ऐसे हैं कि उन्हें सबके प्रति भाव है। काकाजी, पप्पाजी, बा, बेन, अश्विनभाई, शांतिभाई, हरिप्रसादस्वामी, अक्षरविहारीस्वामी, प्रेमस्वामी, दासस्वामी, बापु, भरतभाई, दिनकरभाई, वशीभाई इन सबके प्रति गुरुजी को रियली 'भगवद्भाव' है।

सभी सेंटरों में बेस्ट सर्वदेशीयता का जो दर्शन कराता है वो गुरुजी के यहाँ है, सबको धन्यवाद है। काकाजी जो करवाना चाहते थे, वो पूरी बात आप समझ गए। काकाजी को यह बहुत पसंद था। काकाजी, योगीजी महाराज को बहुत मानते थे। उन्होंने सबके प्रति हम सबको भाव करवाया। सबका गुणगान गाया और एक भव्य 'गुणातीत समाज' की रचना की।

ऐसे गुणातीत समाज में गुरुजी के दर्शन से, गुरुजी के प्रेम से, गुरुजी के साथ जुड़ने से यहाँ सबकी एंट्री हुई। बस ऐसा ही और इतना ही करना कि **गुरुजी के साथ जुड़े रहना। उनके साथ संबंध तब कट ऑफ हो जाता है, जब किसी के भावफेर में पड़ जाते हैं।** लेकिन, आज तो प्रमुखस्वामी, महंतस्वामी, हरिप्रसादस्वामी, काकाजी, पप्पाजी, गुरुजी और संतों द्वारा समाज में इतना ज्ञान डॅवलप हुआ है कि अब कोई हमारी गलत बात सुनने के लिए तैयार नहीं है। किसी भी जगह जाओ अमहिमा की बात सुनने को नहीं मिलती है, न होती है। इससे पूरे वातावरण में इतनी दिव्यता है कि आप अकेले बैठो तो भी आनंद आएगा, समूह में बैठो तो भी आनंद आएगा। खाओगे तो भी आनंद आएगा, सो जाओगे तो भी आनंद आएगा। आनंद-आनंद....क्योंकि वातावरण में पूरी दिव्यता छा गई है। ऐसे संतों द्वारा प्रभु प्रगट हैं और वो जो राज़ी होते हैं, तो गुणगान-महिमा और सेवा की बात होती है। तो, यहाँ प्रभु प्रगट हैं, पूरे वातावरण में प्रभु हैं। उसी प्रभुता का आनंद सबको मिलता है। ऐसा वातावरण बनाने में गुरुजी ने जो तपस्या की, उसकी 'रजत जयंती' मना रहे हैं, उसकी 'गोल्डन ज्युबीली' मना रहे हैं और गुरुजी का 82वाँ साल मना रहे हैं। **ऐसा सब सेंटर में बना रहे ऐसी गुरुजी से प्रार्थना।** आपने जो किया है, **आपकी हाज़िरी सब काम करती है। ऐसे साधु द्वारा भगवान प्रगट हैं।** जहाँ भगवान की हाज़िरी है वहाँ आनंद-आनंद-आनंद, शांति-शांति-शांति, सुख-सुख-सुख और **सभी कारोबार अपने आप चलता रहता है।**

साधुता की ऐसी मूर्ति गुरुजी को बहुत-बहुत धन्यवाद, अभिनंदन और **गुरुजी से प्रार्थना कि अपने गुणातीत समाज के सभी सेंटर्स में यही भाव प्रगट होकर, सब सुख, शांति और आनंद के भोक्ता बनें ऐसा आज के प्रागट्य पर्व और मूर्ति प्रतिष्ठा की 'रजत जयंती' और दिल्ली में आए 50 साल हुए-'गोल्डन इयर' में आप सबको आशीर्वाद प्रदान करें,** ऐसी हमारी सबकी आपसे प्रार्थना। जय स्वामिनारायण...

संतवर्य प.पू. दासस्वामीजी (हरिधाम)

...प.पू. साहेबजी को बहुत सर्दी-जुकाम है, बोल भी नहीं पाते हैं। फिर भी उन्होंने **गुरुजी** की महिमा का अद्भुत वर्णन किया... आज हम सब संत वगैरह बैठे थे। तो, मैंने कहा कि–

यहाँ उत्सव के समय तो उत्सव होता ही है, लेकिन, बिना उत्सव भी गुरुजी की निश्रा में 365 दिन चौबीस घंटे ब्रह्मानंद होता है। **उनमें कोई भेददृष्टि नहीं है।** जैसे **काकाजी** साधु का-गुणातीत संत का लक्षण बताते थे और **साहेबजी** ने **कहा– *'अभेददृष्टि और अविरोध वृत्ति!'***

ये शब्द भले समझ में आएँ या न आएँ, लेकिन यदि सर्वदेशीयता-सुहृद्भाव वगैरह देखना-सीखना हो, तो नए या पुराने हर किसी मुक्त को गुरुजी का दर्शन करके ख्याल पड़ जाएगा। गुरुजी भी बहुत बार 'अपनेपन' की बात करते हुए कहते हैं – *ऐसी 'आत्मबुद्धि-प्रीति' कि यह हमारा है और हम उनके हैं।*
वहाँ बात खतम हो जाती है। सभी ज्ञानमात्र की पूर्णाहुति इसी एक सेन्टेन्स में हो जाती है।

अक्षरभुवन में पढ़े-लिखे, विद्वान, सद्गुणी, ध्यानी, भजनीक, तपसी बहुत सारे संत थे। लेकिन, मुझे पूर्वाश्रम से ही गुरुजी और कोठारीस्वामी से लगाव हो गया था। उनके साथ ही बैठता-उठता था और फिर से सोखड़ा-सांकरदा में भी साथ में रहे। साहित्य, संकलन, पब्लिकेशन, प्रूफ रीडिंग मेरा सब्जेक्ट ही नहीं था और न ही रुचि थी–न लगाव था। तब भी मुंबई में प्रेस के काम के लिए गुरुजी बाई फोर्स मुझे जोड़ में लेकर जाते थे। दरअसल, वे मुझे तैयार कर रहे थे कि भविष्य में यह सेवा तेरे जिम्मे आएगी, तो मुझसे कुछ सीख। यहाँ तक कि मेरे एक्ज़ामिनेशन के समय में भी वे मुझे खींचकर प्रेस में ले जाते। काकाजी, स्वामीजी ने ऐसी मैत्री करवाई थी।

उस समय के गुरुजी और अब के गुरुजी... कहाँ से कहाँ तक ले आए! **ये योगीबापा का आशीर्वाद-संकल्प है।** गुरुजी तो कहते थे कि मैं लायक नहीं था-साधु का कोई लक्षण ही नहीं! प्रेमस्वामी भी ऐसा कहते थे। कोठारीस्वामी तो साधु बनने के लिए तैयार नहीं थे और मैं भी नहीं था। हम सब में से सरलता से जो साधु बने, वो **शास्त्रीस्वामी** और दूसरे – पूर्वाश्रम के मेरे बड़े भाई **महापुरुषस्वामी।** हममें से किसी ने भी सरलता से 'हाँ' नहीं करी थी। मेरा कहने का मतलब यह है कि यह सब योगीबापा और काकाजी महाराज की कृपा है।

आई फील मोस्ट लक्कीएस्ट साधु कि संस्कृत पढ़ने के निमित्त मुझे सांकरदा, ताड़देव और दिल्ली में गुरुजी के साथ 10 साल रहने का मौका मिला। काकाजी महाराज का इस दौरान खूब लाभ मिला।

बापु को मालुम है कि काकाजी महाराज चॅलेन्ज के साथ कहते थे–मैं कैसा डॉक्टर कि मुकुंदजीवन और महेन्द्र बापु का केस कोई न ले, पर मैंने लिया है और पार लगा दूँगा राजा! आज हम देखते हैं कि शिल्पकार योगीबापा, काकाजी और पप्पाजी ने मूर्ति तराश दी और गुरुजी इस मंदिर के 'प्राण' बन गए। **99 पर्सेन्ट तो काकाजी ने ही ये मूर्ति तराशी और हमें गुरुजी की भेंट दी।**

नरेन्द्र शर्माजी ने जो बात की, उस पर मैं सोच रहा था कि मैं हरिधाम में रहता हूँ; तो क्या हरिप्रसादस्वामीजी को सचमुच में 'प्राण' मानता हूँ? हरिधाम में रहने वाले, मंदिर में आने वाले, सभा करने वाले, उनके वचन के मुताब्रिक सेवा करने वाले मानते हैं? काकाजी, पप्पाजी, हरिप्रसादस्वामी महाराज, साहेबजी ने योगी महाराज को 'प्राण' माना, तो मान्यता, समझ, सत्य, ठहराव आदि अपना सब छोड़ दिया। साहेबजी को अमेरिका जाना था, लेकिन बापा ने जाने की मना कर दी। स्वामीजी को तो क्रिकेट खेलने कोलम्बो जाना था, लेकिन बापा ने कह दिया – *शास्त्री महाराज ने तुम्हारा सिलेक्शन कर लिया है,* तो वे नहीं गए-सब छोड़ दिया। काकाजी की तो कितनी

कसौटी करी? आज प्रदक्षिणा करते हुए मैंने प्रेमस्वामी से कहा कि मल्कानी अंकल जैसे कई, जिन्होंने काकाजी के दर्शन ख़ास नहीं किए हो, उन्हें एक ही सेन्टेन्स में यदि काकाजी की महिमा कहनी हो, तो इतना ही कहें कि, जिस विभूति के लिए **योगीबापा ऐसा कहें** कि ***'दादुभाई के लिए मेरी अक्षरदेरी अगर गिरवी रखनी पड़े, तो रख दूँ'*** – यह काकाजी की महिमा है। **योगीजी महाराज को दो चीजें प्राणप्यारी थीं – एक शास्त्रीजी महाराज और दूसरी अक्षरदेरी।** ऐसे ही पप्पाजी, स्वामीजी, साहेब की महिमा भी अपरंपार है। साहेबजी का मैं साक्षी हूँ। पचास-पचपन साल पहले की बात कर रहा हूँ। साहेबजी को शायद याद न हो, लेकिन राजकोट में साहेब पहली बार आए थे, तब योगी बापा ने खुश होकर उन्हें गले लगा लिया और कहा था– *जैसे जागास्वामी ने शास्त्रीजी महाराज को आशीर्वाद दिया था कि तुम संकल्प न करो तो तुम्हारी खोट और पूरा न करूँ तो वो मेरी खोट है, यूँ–* ***'हे जशुभाई साहेब! तुम संकल्प न करो वो तुम्हारी खोट, मैं पूरा न करूँ तो मेरी खोट।'***

...गुरुजी गुणातीत भावना वाले-गुणातीत स्वरूप! वे खुद तो कहते हैं कि मैं तो सेवक ही हूँ। लेकिन, हम इन्हें 'हमारे प्राण' लिखते हैं और लिखना ही चाहिए। पर, जैसे इन सत्पुरुषों ने अपने गुरुदेव को 'प्राण' माना ऐसा हमने माना?

मेरी तो यही प्रार्थना है कि **मैं और हम सब** जहाँ भी जिस भी सेन्टर में हों, उस सेन्टर के जो प्राणाधार स्वरूप हैं, उन्हें दिल से मानें। सभी को हम बताएंगे ज़रूर कि हमारे स्वामीजी ऐसे, योगीजी महाराज का कार्य ऐसा है, दिल्ली-विद्यानगर में ये हैं-वो है। ये सब कहेंगे और कहना भी चाहिए, लेकिन हम दिल से मानते हैं क्या? **अगर मानते हैं, तो सहज स्वभाव से चौबीस घंटे उनकी स्मृति रहनी चाहिए।** हमने देखा है कि **गुरुजी को रहती है। वे रात को उठ-उठ कर भजन करते हैं।** वैसे पूरा दिन आनंद-मस्ती सब भले करते हैं, लेकिन रात को उठ-उठ कर भजन करते हैं। क्यों करते हैं? **काकाजी ने उन्हें भजन का-'स्वामिनारायण' महामंत्र की गरिमा का साक्षात्कार करवाया है।**

ऐसे ही **कोठारीस्वामीजी** का जीवन हमने देखा है। वे जिस स्वरूप के पास रहे, उन्हें वे 'प्राण' मानते थे। कोई भी ऐसा रोग नहीं था, जो उनके शरीर में नहीं था। तो भी बोलते थे – ***हरि राखे एम रहेवुं।*** ऐसा कौन बोल सकता है? उन्हें इतनी डिफीकल्टी थी कि चल नहीं सकते थे, खा-पी नहीं सकते थे, उठ-बैठ नहीं सकते थे, सो नहीं सकते थे, तो भी कहते – *हरि राखे एम रहेवुं।* प्रेमस्वामी ऐसा मानते हैं, छोटे-छोटे संत भी मानते होंगे। यूँ हरेक सेन्टर में उनके स्वरूप को 'प्राण' मानते होंगे। **काकाजी ने जिस हेतु अपने योग में लिया, योगीबापा ने साधु बनाया इन्हें यह ज़रूर मानना चाहिए और नहीं मानेंगे तो बापा मनवाएँगे, वो भी मुझे भरोसा है।**

सब स्वरूपों की आयु बढ़ रही है। हम भी 74-75 के हो जाएँगे। अब 'प्राण' नहीं मानेंगे, तो कब मानेंगे? प्रार्थना करने का मुझे अवसर मिला है और काकाजी भले समाधि में है, लेकिन मेरी प्रार्थना तो सुनते हैं। पप्पाजी-स्वामीजी भी मेरी प्रार्थना सुनते हैं। आत्मीयता के दावे से मैं आप सबको मेरे साथ गिन कर स्वरूपों के चरणों में प्रार्थना करता हूँ कि आपने जैसे अपने आराध्यस्वरूप को 'प्राण' माना है, वैसे मैं और हम सब जाग्रत, स्वप्न, सुषुप्ति में प्राणस्वरूप मान सकें। गुरुजी का स्वास्थ्य कम से कम 100 साल तक बहुत ही निरामय और स्वस्थ रहे और उनको 'प्राण' मानते हम सब भी हाज़िर रहें।

प.पू. वशीभाई (पवई)

यह अक्षरधाम की सभा है। हम सब प्रवचन, टॅक्नॉलॉजी, भोजन द्वारा जो दिव्य आनंद महसूस कर रहे हैं, वह **'आनंदस्वामी'** का आनंद है। इसके लिए गुरुजी को खूब-खूब धन्यवाद है। आज उनका 82वाँ प्रागट्य दिन है। 82 को यदि पलटा दो, तो 28 होता है। लगता है – ही इज़ 28 इयर यंग। वे खुद भी ऐसा कहते हैं। हाँ, मानव के लिए कह सकते हैं कि केन बी यंग बाय हार्ट, माईन्ड एन्ड एक्शन। वे तो स्वरूप हैं।

गुरुजी तो तीनों प्रकार से यंग हैं। कैसे?

हार्ट से देखो तो बड़े से बड़ी या छोटे से छोटी फीलींग का इस उम्र में भी उन्हें पता रहता है और इसे इम्पलीमेन्ट करते हैं। सुबह पानी की बोतल का डिज़ाईन लेकर आशीष आया था। **'स्टेच्यू ऑफ यूनिटी'** का डिज़ाईन था। डिज़ाईन से समझ सकते हैं कि मार्किट में जो लेटेस्ट है, वो गुरुजी जानते हैं। इतना ही नहीं, उन्हें पता है कि 'सरदार' हरिप्रसादस्वामीजी और साहेबजी को प्रिय हैं, तो ऐसा बोतल बनवा कर उन्हें भिजवाने के लिए कहा। धीस इज़ **यंगनेस बाय हार्ट।**

स्वरूपों का भी इतना ख्याल... साहेबजी की तबियत नाज़ुक थी, तो उन्होंने अभिषेक से कहा कि आज रात की भी टिकट मिलती हो, तो लॅट हिम बी कम्फर्टेबल एट हीज़ निवास इन मोगरी। इस उम्र में नॉर्मली नो वन वील थिंक लाईक धिस। बट **ही इज़ स्टिल यंग बाय हार्ट, 'सेवक' बाय हार्ट कि मैं क्या कर दूँ!** बड़ों के लिए-स्वरूपों के लिए तो करें, पर छोटे सेवक या गृहस्थ के लिए भी वे इतना सोचते हैं। गर्ग साहेब के मसूरी रिसॉर्ट में शिविर थी। वहाँ पर ऑल ऑफ ए सडन सब एरेंज करवा कर **'निष्काम'** और **'महिमा'** की डॅस्टीनेशन मॅरेज करवा दी। दिव्यता के माहौल में जो शादी हुई, वो दंपत्ति जिंदगीभर याद रखेगा कि हमारी मॅरेज गुरुजी ने किस तरह से करवाई। **आर्थिक रूप से संपन्न बड़ा आदमी डॅस्टीनेशन मॅरेज कर सकता है। छोटे से छोटे भक्त के लिए ऐसा करना – धेट इज़ यंगनेस एट हार्ट।**

यंगनेस इन थींकींग – कल हमने टेक्नोलॉजी से देखा कि मंदिर के 25 साल की जो डॉक्यूमेन्ट्री बनाई है – वह देखने में हमें चार घंटे लगे, उसे बनाने में चार महिने लगे

और

योगीजी महाराज-काकाजी की एक योजना कि दिल्ली में एक ऐसा समाज हो, उसे साकार करने में 50 साल लगे।

काकाजी को ख्याल था कि यह होने वाला है और गुरुजी ने भी 1968 में उसे स्वीकार किया।

काकाजी-पप्पाजी कहते कि *स्वर्ग पृथ्वी पर लाएँगे।* गुरुजी कहते हैं कि *तब हम मानते नहीं थे, लेकिन वो रियालिटी थी, तो आज वो हुआ।* **गुरुजी सही कहते हैं कि *हम मानते नहीं हैं।***

अभी मुंबई-लंडन की फ्लाईंग टाईमिंग नौ घंटे है। पर, रिसर्च चल रही है कि प्लेन खूब ऊपर उठा कर नीचे लाएँगे, तो एक घंटे में मुंबई से लंडन पहुँच जाएँगे। आज यह सिर्फ सोच है, लेकिन आगे जाकर हक़ीक़त में होगा। इसी तरह दिल्ली में आज ऐसा समाज तैयार किया, भक्तों में ऐसा भाव भरा। **दासस्वामी** कह रहे थे छोटे-छोटे बच्चे

आकर भी कैसे भाव से सेवा करते हैं! **बापु** कहते कि यहाँ आते हैं, तो किसी भेदभाव के बिना सबकी आवभगत करते हैं। दूसरी बात–**गुरुजी ने सेवकों को इतनी अच्छी ट्रेईनींग दी है कि कोई किसी की पंचाती नहीं करता और उनमें इतना 'भगवद्भाव' भरा है कि वो इसी भाव से जीता है-सेवा करता है।** कल जो **क्लीपींग्स** हमने देखीं, उसके पीछे गुरुजी की **छुपी भक्ति, छुपा भजन** और **भक्तों का छुपा जतन** है। छोटी-छोटी बातों का ध्यान रख कर, राईट टाईम पर राईट बोल कर – सॉफ्ट शब्दों में बोलना हो और ज़रूरत पड़े तो कड़क शब्दों में बोलना हो – ऐसे गुरुजी ने एक-एक भक्त जतन किया है।

यंगनेस इज़ इन टेकनीक – महाराज ने 1200 वचनामृत कहे हैं। उसमें से 262-73 ग्रंथ के रूप में प्रकाशित किए हैं। लेकिन उसमें करामात के वचनामृत बहुत कम हैं। **गुरुजी ने काकाजी से करामात सीख ली, जिससे उन्होंने सभी स्वरूपों के हृदय में स्थान ले लिया।** आज गुरुजी के जन्मदिन पर **हम गुरुजी से प्रार्थना करके भेंट माँगते हैं कि प्रत्यक्ष स्वरूपों के साथ हमारा ऐसा संबंध बनाने की टॅकनीक आपसे सीख जाएँ,** ताकि आपका 'हरा अनुग्रह' - आपकी 'ग्रेस' हम पर परमेनन्ट बनी रहे। सभी स्वरूपों की बातों का सार यही है कि–

जिस संत के साथ हम जुड़ें हैं, उनके साथ ऐसा दृढ़ संबंध हो जाए–वही पूर्णाहुति है।

लॅबोरेटरी में पायलोट प्रोडक्शन का सेम्पल टेस्ट होता है। **काकाजी ने दिल्ली में एक पायलोट प्रोडक्शन–**'सर्वदेशीयभाव से जीवन जीता' समाज तैयार किया।

दासस्वामी ने अच्छा बताया कि यहाँ 365 दिन हर रोज़ नया प्रोजेक्ट होता है। हरिप्रसादस्वामीजी भी ऐसा ही करते हैं – आज एक मंदिर तो दूसरे दिन दूसरा मंदिर। हर रोज़ एक प्रोजेक्ट! यहाँ गुरुजी सबको हर रोज़ एक नए प्रोजेक्ट में जोड़ते हैं, ताकि आनंद करते-करते देह का भाव-जगत का भाव छूट जाए और भगवान के भाव-ब्रह्म के भाव से जुड़ जाएँ। **ऐसे ब्रह्मभाव और गुणातीतभाव में रहते संत बनाने की फॅक्टरी यहाँ खुली है।**

काकाजी की एक ही भावना थी कि हम सब गुणातीतभावना वाले साधु बनें। गुणातीतभावना के लिए कहा जाता है – सर्वदेशीयता, अभेद दृष्टि, अविरोध वृत्ति। ऐसा भाव दिल्ली के सेन्टर में है। **साहेब दादा** ने आशीर्वाद में कहा–

जैसे दिल्ली के सेन्टर में है, वैसा सब सेन्टर्स में हो। गुरुजी हॅज़ फॉर्म्ड ए बॅन्चमार्क।

तो, ऐसा बॅन्चमार्क – जो गुरुजी ने रखा है, वो सभी सेन्टर्स में हो।

गुरुजी को कुटुंबभावना बहुत पसंद है, इसीलिए ये सारे उत्सवों का आयोजन होता है। भरतभाई की आने की बहुत इच्छा थी, लेकिन कोई काम आया तो नहीं आ पाए, लेकिन वे दिल से यहीं हैं।

हम सबकी यही भावना है कि सभी स्वरूपों की तबियत बहुत अच्छी रहे और हमें खूब-खूब लाभ देते रहें। गुरुजी माइन्युट डीटेइल्स पर भी बहुत ध्यान देते हैं। उनकी निश्रा में सेवक इतने परफॅक्ट बन गए हैं कि हरिभक्तों की फ्लाइट डीटेइल्स की पूरी जानकारी रखते हैं। जैसे फ्लाइट कहाँ से कब उड़ी और कहाँ तक पहुँची, सारी डीटेइल्स ट्रॅक करते हैं। इतनी जानकारी तो हमें खुद को पता नहीं होती, जितनी उनके सेवकों को होती है।

आज माता-पिता अपने बच्चों को हॅन्डल नहीं कर पाते; पर गुरुजी 400-500 फॅमलीज़ को हँडन्ल कर रहे हैं, उन्हें डायरेक्शन देकर, उनमें जो महिमा भाव भर रहे हैं, वो बहुत बड़ी बात है।

करोड़ों धन्यवाद हो गुरुजी को कि उन्होंने काकाजी के हृदय की इच्छा व भावना परिपूर्ण की है। तो, आज आप हम **सभी को आशीर्वाद दें कि ऐसी भावना सब जगह परिपूर्ण हो,** आपका स्वास्थ्य निरामय और तंदुरुस्त हो। जैसे आप हँसते-हँसाते रहते हो, ऐसे ही करते रहो–ऐसी प्रार्थना...

पू. बॉसस्वामी (हरिधाम)

गुरुजी के लिए तो मैं क्या बोलूँ? **जो शिकायत करते रहते हैं, वे मंज़िल तक पहुँचते नहीं और जो मंज़िल तक पहुँचते हैं, वे शिकायत करते नहीं।** प.पू. काकाजी के वचन से गुरुजी यहाँ आए। पूर्ण श्रद्धा और विश्वास से यहाँ रहे, वह हमारे जीवन के लिए प्रेरणा है। प्रबोधस्वामी कहते थे कि बारह साल दिल्ली रहे, त्यागवल्लभस्वामी ने कहा– *मैं भी 6 महीने दिल्ली रहा हूँ,* सुबोधस्वामी और संतवल्लभस्वामी ने बताया कि *हमें भी सेवा का मौका मिला था।*

साज उसी का है, जो बजाना जानता है, गीत उसी का है जो गाना जानता है,
आश्रम उसी का है, जो रहना जानता है, परमात्मा उसी का है जो पाना जानता है।

गुरुजी ऐसे हैं कि केन्द्र स्थान में उन्होंने काकाजी को रखा है। काकाजी के दो-तीन प्रसंग बताता हूँ। प्रसंग छोटा है, लेकिन 'दास के दास' का दर्शन होता है। कुरुक्षेत्र में आयुर्वेद वाले महेन्द्रभाई रहते थे। काकाजी वहाँ गए थे। महेन्द्रभाई की वाईफ अपने बेटे को बाथरूम में स्नान करवा रही थीं। काकाजी ने उस बच्चे को उठा लिया और बहनजी से कहा कि *आप किचन में जाइए, मैं इसे स्नान करवा देता हूँ।* और... जैसे ठाकुरजी को स्नान करवाते हों, वैसे काकाजी ने उसे नहलाया। उस बच्चे को वॉटर तो मिला, पर ब्रह्म का वॉटर भी मिला। आज वो साधु बना और उसका नाम है–'प्रियदर्शनस्वामी।' **दो मिनिट के स्पार्क में पूरा जीवन दे दिया!**

दूसरा प्रसंग– सलाड में एक मनुभाई जोशी हरिभक्त थे, अब वे स्वधाम गए। उन्होंने कहा होगा कि हम सबको उभराट शिविर में आना है। वे उभराट पहुँचे तो स्वामीजी और काकाजी बैठे थे।

उन्होंने मनुभाई से पूछा– *सब भूदेव आ गए!*

वे बोले– *हाँ, आ गए। पर, पूछो तो सही–हम शिविर में कैसे आए हैं! अरे, बावल की लकड़ी काट के आए हैं!* तब स्वामीजी और काकाजी की आँखों में आँसू आ गए।

काकाजी बोले– ***मैं आज से आपका वकील!***

जैसे ही शिविर पूर्ण हुई, काकाजी सलाड गए और बहुत बढ़िया महापूजा की! **ऐसे काकाजी भक्तवत्सल थे। भक्तों के सुख के लिए काकाजी सतत कार्यरत थे।** दूसरी बात–मैं फर्स्ट टाईम अमेरिका गया था। वहाँ किसी युवक से कहा कि कोई प्रसंग बताओ! उसने बताया कि फर्स्ट टाईम जब स्वामीजी यहाँ आए थे, तो हम सब ने पैसे इकट्ठे करके नई कार ली थी।

तो, स्वामीजी ने कहा– *इसको इतना क्यों सजाया है?*

भक्तों ने बताया– *आप पहली बार आए हैं न!*

स्वामीजी ने कहा– ***काकाजी जब तक हैं, ये कार लेकर उनकी सेवा में लग जाना।***

आपस का जो यह 'भगवद्भाव' है, स्वामीजी जो रिस्पेक्ट सिखाते हैं, 'ब्रह्मभाव' से सेवा करना सिखाते हैं, वह दर्शन मुझे हुआ। **गुरुजी को स्वामीजी की कितनी महिमा है!** मैं युवक था, तब कंडारी में प्रेमस्वामी ने स्वामीजी के लिए बहुत बढ़िया आसन बनाया था। आसन देखकर **गुरुजी** बोले–

जो इस आसन का दर्शन करेगा, उसका आसन स्थिर हो जाएगा!

आज भी यह बात मेरे हृदय में है।

प्रारब्ध और प्रकृति चेइन्ज नहीं होते, लेकिन ऐसे संतों के संबंध से बदल जाते हैं।

काकाजी, पप्पाजी और स्वामीजी ने गुरुजी की अद्भुत भेंट यहाँ दी है। ठाकुरजी और स्वामीजी के चरणों में प्रार्थना कि गुरुजी की सेहत अच्छी रहे। यहाँ इतने संतों और साधकों के लिए गुरुजी ने कितना प्रयत्न किया होगा? गुरुजी, जैसे आपने सभी स्वरुपों को राज़ी किया है वैसे हम कर सकें। बुद्धि बहुत खतरनाक चीज़ है, **स्वामीजी** कहते हैं–

पॉज़िटीव विचार ही अक्षरधाम का प्रवेश है और नॅगेटीव विचार अक्षरधाम से करोड़ों माईल दूर रहने का।

प.पू. कोठारी प्रेमस्वरूपस्वामीजी (हरिधाम)

... आज के दिन के लिए स्वामीजी महाराज ने गुरुजी का नाम लेकर और आप सबको याद करके जय स्वामिनारायण कहा है।

मेरा बहुत बड़ा सद्भाग्य-सौभाग्य है कि स्वामीजी और काकाजी ने, गुरुजी को बहुत नज़दीक से देखने की मुझ पर कृपा की। गुरुजी की सेवा में रहने की उन्होंने आज्ञा दी; मैं मानता हूँ ऐसे संत की गोद जब मिले, तो हम सब बहुत बड़े भाग्यशाली हैं। ऐसे संत की जब गोद मिलती है, तब भाग्य और भी बड़ा हो जाता है। **गुरुजी के पास रहने से बहुत कुछ सीखने को मिला है।** कल मूर्तिप्रतिष्ठा होने के बाद जो 25 साल के इतिहास का दर्शन करवाया, उसके लिए सबको बहुत-बहुत धन्यवाद है। इसमें गुरुजी ने जो बातें बताई, वो सब बात हृदयस्पर्शी थीं। एक बात मुझे बहुत पसंद आई कि प्रभु को प्रसन्न करने के लिए 5 चीज़ें करनी चाहिएँ।

पहली बात–हम त्यागी हैं तो **हम सबका जीवन** महाराज और गुणातीतानंदस्वामी ने जो **वचनामृत, शिक्षापत्री और स्वामी की बातें**–तीन ग्रंथ दिए हैं, इसके **अनुसार होना चाहिए।**

दूसरी बात–हमें जो संत मिले हैं, इनके पास बहुत सरलता रखनी, जैसी सरलता गुरुजी ने काकाजी, पप्पाजी, स्वामीजी, साहेबजी के पास रखी है। गुरुजी के कहने का तात्पर्य यह था कि आज वो सरलता आप गुरुजी के पास रखें।

तीसरी बात–संत के पास निष्कपटभाव रखना। हृदय में जो भाव है वही कपटरहित जीवन यदि ऐसे संत के पास रहे, तो जीवन धन्य हो जाता है।

ये चीज़ें मैंने गुरुजी के जीवन में देखी हैं। गुरुजी ने अपने अनुभव की बात करके सब शॉर्टकट्स बताए हैं। 'भगवत्स्वरुप संत' को प्रसन्न करने की सबसे अच्छी और शॉर्टकट बातें बताई हैं। दो बातें मैं भूल गया हूँ, लेकिन ये तीन बातें मैंने गुरुजी के जीवन में देखी हैं।

वो हमेशा काकाजी के पास बहुत सरल रहे। साहेबजी ने बताया कि दिल्ली आने का इनका मन नहीं था। इनकी देह भी ऐसी कि वे कष्ट सहन ही नहीं कर सकते थे। फिर भी उन्होंने योगीजी, काकाजी, पप्पाजी की मरज़ी देखी और उसे शिरोमान्य कर ली। हमें यह बात सीखनी है कि हमारा मन हो या न हो, माने या न माने; लेकिन जैसे गुरुजी ने जीकर बताया–वैसे संत में से आई बात को पकड़ कर यदि हम जिएँगे और हमारे जीवन में यदि निष्कपटभाव होगा, तो जीवन धन्य हो जाता है। कल जो इतिहास देखा उससे गुरुजी की काकाजी के प्रति की प्रीति का ख्याल पड़ा। ऐसी निष्ठा से आपको गुरुजी में जुड़ना है। मैं और दासस्वामी, स्वामीजी के पास रहते हैं तो उनसे ऐसे जुड़ना है। **दासस्वामी** ने बताया–**जो जहाँ है, उसे वहाँ भगवान स्वामिनारायण मिले हैं, ऐसे भाव से जुड़ना है।** वचनामृत प्रथम 27 के अनुसार, गुणातीत संत में भगवान रहे हैं–बसे हैं। काकाजी, पप्पाजी, स्वामीजी की बड़ी कृपा है कि गुरुजी जैसे संत आपको दिए हैं। आपके लिए आज वे आदर्श हैं। आपको आदर्श जीवन बनाना है और वो संभव है। वह इसीलिए कि गुरुजी हाज़िर हैं, उन्होंने आपका विश्वास किया है, आपको प्यार दिया है।
सत्संग में आपका एक दिन भी नहीं गुज़रता, यदि गुरुजी आपके जीवन में नहीं होते...
गुरुजी के साथ मुझे मैत्रीभाव है। जब सेवा में जुड़ा तो एक बार, दो बार, तीन बार आया।
फिर स्वामीजी से मैंने कहा– *जाने की मरज़ी नहीं है।*
स्वामीजी ने कहा– *क्यों?*
तो, मैंने खुले मन से कहा– *जिस भाव से मैं आपकी सेवा कर सकता हूँ, वैसा भाव गुरुजी में नहीं रहता है।*
तब स्वामीजी ने आशीर्वाद दिया– *तू मेरे और काकाजी के वचन से जाता है न? बापा ज़रूर वो भाव उत्पन्न कर देंगे।*
वो बात जीवन में साकार हो गई।
तो, **गुरुजी** आप कृपा करना, आपके साथ मित्रभाव है, लेकिन देखा है कि **आप जैसे काकाजी, पप्पाजी, स्वामीजी के पास दासभाव से जीएँ हैं, ऐसे मैत्रीभाव की अपेक्षा हमेशा है।** जैसे आप अपने और काकाजी के संबंध वालों के पास हाथ जोड़कर बैठते हैं, हमारा जीवन ऐसा बने कि स्वामीजी के संबंध वालों के पास मैं कुछ नहीं हूँ। हमें नियम मिला था और काकाजी व स्वामीजी को भगवान स्वामिनारायण का वचनामृत प्रथम 24 का अंतिम पैराग्राफ, प्रथम 58 का अंतिम पैराग्राफ, मध्य 25 का अंतिम पैराग्राफ और अंत्य. के 11 व 26 का अंतिम पैराग्राफ बहुत पसंद भी है; तो, उसके अनुसार हमारा संबंध बना रहे, ऐसी कृपा गुरुजी अब बरसाना।
जैसे दासस्वामी ने बताया–हम सबकी भावना यही है कि आप 28 साल के ही रहें, बढ़ो ही नहीं और हमारे बीच निरामय स्वास्थ्य के साथ रहें, ताकि हमेशा ऐसी मूर्ति का दर्शन कर पाएँ–ऐसी महाराज-स्वामी के चरणों में प्रार्थना है। आप भी हम सब पर कृपा करना कि आपने जैसे काकाजी का सेवन किया, ऐसे हम जहाँ हैं वहाँ सत्पुरुष का सेवन करके उनमें खो जाएँ। उसमें हमारे व्यक्तित्व का विलीनीकरण हो जाए ऐसी कृपा करना।

प.पू. गुरुजी

मंदिर की मूर्ति प्रतिष्ठा हुए 25 साल हो गए। जब ये फंक्शन को इस तौर पर मनाने की बात आयी, तब मैं आश्चर्य से सोचता था कि 25 साल कहाँ चले गए पता नहीं लगा। दरअसल काकाजी स्वधाम गए, उसके बाद मुझे यहाँ रहना ही नहीं था। **मल्कानी अंकल** को भी याद होगा। 16 मार्च को काकाजी की श्रद्धांजलि की सभा थी। तब

सब की आँखों में आँसू देख कर काकाजी की प्रतिभा से मल्कानी खूब प्रभावित हुए और उन्हें फील हुआ कि काकाजी के स्थूल रूप से जाने से यहाँ के समाज में एक वॅक्यूम-सा बन गया है... सभा के तुरंत बाद मल्कानी ने मुझसे कहा–

गुरुजी, काकाजी का जैसा प्लान हो, वैसा मंदिर तुम बनवाना और पैसे की कोई चिन्ता नहीं करना, मैं तुम्हारे साथ ही हूँ। उस समय इन्होंने यहाँ तक कहा था कि कल से मंदिर का काम शुरू करना हो, तो मैं आज शाम को तुम्हें कुछ रुपए भेज देता हूँ।

पर, जैसे कि मैंने कहा–*मुझे मंदिर करना ही नहीं था।*

सो, मैंने ऐसा कहा– *अभी तो कुछ विचार नहीं है; जब शुरू करना होगा तब मैं सबसे पहले आपको कॉन्टेक्ट करूँगा।*

ये है इस मंदिर का इतिहास कि जो करना ही नहीं था, पर वो किस तरह हो गया हक़ीक़त में मुझे भी पता नहीं है। हाँ, एक चीज़ ज़रूर कहूँगा कि काकाजी ने शुरू में जानी परिवार, पकाई साहेब, विजय बाबू जैसों के परिवार से एक छोटा-सा समाज डॅवलप करके मुझे दे दिया था। बाद में विनोदभाई, प्रकाशभाई वगैरह जुड़े और धीरे-धीरे स्वामिनारायण के संतों के बारे-ख़ास तो **'गुणातीत समाज'** के बारे में यहाँ ख्याल पड़ा। **महाराज की एक देन ही है कि गुणातीत परंपरा के कॉन्टेक्ट में जो आ जाता है, वो उनका ही बन जाता है।** ऐसी नहीं कि यह सिर्फ दिल्ली में है, हरिधाम, मुंबई, ब्रह्मज्योति, गुणातीत ज्योत, लंडन-अमेरिका में जहाँ-जहाँ ये 'गुणातीत परिवार' हैं, वहाँ ऐसी पारिवारिक भावना से एक पूरा समाज धीरे-धीरे पक्का डॅवलप हो जाता है।

शाम को हम रोज़ स्वामी की बातें पढ़ते हैं। उसमें गुणातीतानंदस्वामी ने ये 'आशीर्वाद' दिए हैं। वैसे तो उनकी सारी बातें आशीर्वाद रूप ही हैं। स्वामी ने इसमें भी कोई डेफीनेशन नहीं दी है, पर आशीर्वाद बरसाए हैं कि

'भगवान के भक्तों में आत्मबुद्धि यही सत्संग है।'

गुजराती में लिखा है– *'ए ज सत्संग छे।'*

भगवान के भक्तों में आत्मबुद्धि रखना सत्संग है, ऐसा नहीं कहा।

यानि सत्संग की कई डॅफीनेशन्स कही जाएँ, उसमें से यह भी सत्संग की एक डॅफीनेशन है ऐसा नहीं। 'यही सत्संग है'– ऐसा कहा है।

जैसे कई बार बच्चा और कुछ खाने की ज़िद्द करता है, तो माँ कहती है कि– *'आज यही खाना बना है, खाना है तो खा, वर्ना कुछ मिलेगा नहीं।'*

सो, स्वामी का इनडायरेक्ट्ली यह कहना था कि बाकी जो सत्संग बोले जाते हैं, वो 'सत्संग' है ही नहीं। आप में से बैठे हुए कइयों को मेरी यह बात हज़म नहीं होगी कि हम अन्य महात्माओं का पाठ सुनने जाते-करते हैं, पूजा-पाठ करते हैं, तो क्या वो सत्संग नहीं है ? मैं कहता हूँ– नहीं ही है। **'सत्संग'** तो सिर्फ गुणातीत समाज में जो कथावार्ता होती है, वही है। क्योंकि यहाँ एक कुटुंबभाव का 'सत्संग' है और इसे स्वामीजी ने सर्टीफाई कर दिया है। हमारे वैद्यराज बैठे हैं। वे मेरे लिए दवाई भेजते रहते हैं और मानते हैं कि ये दवाई मैं 'मेरे बाप' के लिए भेजता हूँ। कहाँ वैद्य, कहाँ पेशन्ट और कहाँ 'बाप' बीच में आ गया! तो, ये 'सत्संग' है। हमें ऐसा ही 'सत्संग' किया करना है। माला नहीं फिरानी या भजन नहीं करना, ऐसा नहीं है। इसका भी एक सबूत है कि भजन नहीं करना ऐसी

लॅटीट्यूड स्वामी ने नहीं दी है। खूब ध्यान से सुनना– **स्वामी की एक बात में लिखा है कि दो माला कम फेरोगे तो चलेगा, नहीं फेरोगे तो चला लूँगा ऐसा नहीं लिखा है…** ऐसी खूब रहस्यमय बातें शाम को आप जो आते हैं, उनके भेजे में थोड़ी-थोड़ी डालने की मैं कोशिश कर ही रहा हूँ। सो, नई कोई बात नहीं करनी है…

आज साहेबजी दोबारा नहीं आए, इससे ही ख्याल पड़ता है कि उनकी तबियत खूब नादुरस्त है। वर्ना वे पटेल हैं; देह की परवाह करें ऐसे नहीं हैं। प्रेमस्वामी, दासस्वामी आदि भी आए हैं, आत्मीयता से आए हैं। मैंने भी कहा था कि भई, आप आना क्योंकि मैं अकेला क्या करूँगा? सब साथ में हों, तो आनंद आता है। वर्ना कौन कॉफी पिलाता? दासस्वामी ने कहा– *आज कॉफी बनाओ, मैं बैठा हूँ।* इसलिए कॉफी बनी है…

…बिना किसी फरक़, स्वामिनारायण के जो भी हैं, वो अपने हैं। क्यों अपने हैं? जैसे मेरे बारे में कहते हैं कि महाराज के समय में ये **'आनंदस्वामी'** थे। यूँ महाराज के समय के कोई भी इधर-उधर से छटक तो गए ही नहीं होंगे। कोई मुक्तिजीवनस्वामी के पास, कोई प्रमुखस्वामी महाराज के पास, कोई स्वामीजी के पास, कोई साहेब के पास… सब हैं तो स्वामिनारायण के! यूँ **हम सब हैं तो एक ही मूल से।**

…ये जो आत्मबुद्धि, प्रीति, समर्पण, भोग देना, टाईम देना–वो दूसरों के लिए तनिक भी नहीं रखना। समाज सेवा, राजसेवा वो अपना फील्ड ही नहीं है। भगवान के भक्तों के लिए ही, मतलब–

1. स्वामिनारायण का आसरा वाला
2. उनके संत के साथ जुड़ा हुआ
3. उनके संत के संबंध वालों के साथ आत्मीयता से जोड़ता हुआ, कोशिश करता हुआ, चलता हुआ।

हम अपेक्षा रखते हैं कि हर एक ऐसा ही रहे, पर हम आत्मीयता से टोटली कितना रहते हैं? हमारी लिमिट होती है। वह इसलिए कि हम मेन्टल कॉन्सियसनेस से जुड़े रहते हैं और माईन्ड हॅज़ ए लिमिट। माईन्ड को चंद्र की उपमा दी है। चंद्र बढ़ता-घटता रहता है, वैसा ही माईन्ड का फंक्शन है। तो, जब तक माईन्ड है, निर्णयों में उलट-पलट रहेगा। इसलिए **काकाजी बार-बार बोलते थे– *'तुम्हारी मेन्टल कॉन्सियसनेस छोड़ो।'*** हम समझते थे–मेन्टल कॉन्सियसनेस है, तभी तो हमारी ऐसी भावना है कि हम आपको राज़ी करें। आज थोड़ा ख्याल आता है कि माईन्ड छोड़ कर वे जैसे चाहें, वैसे हमें उनके इशारे पर चलना चाहिएगा। सिर्फ उनकी ओर नज़र रख कर चलना था। फिर वे अपने आप हमें रास्ता टॉर्च करते रहेंगे; मतलब थोड़ा-थोड़ा दिखाते रहेंगे। इसके लिए भी हम गाइडन्स बाहर से लेने की बजाय 'स्वामिनारायण, स्वामिनारायण' भजन से लिया करें। जैसे काकाजी ने मुझे सिखाया–सुबह उठ कर धुन फेंको। रात को भी भगवान को याद करके सो जाओ। वे हमारी कम्फर्टस का भी ख्याल रखते थे। वे कहते थे कि रात को तुम 20 मिनिट तो धुन नहीं करोगे। सो, रात को कम से कम **'तीन मिनिट'** करो। ट्रंक कॉल के लिए तीन मिनिट तो कम से कम चाहिए। मुझे क़बूल करवाया था कि तीन मिनिट तो करोगे न? फिर बोले– *इससे* ***तुम्हारी सारी जिम्मेदारी बापा की होगी।*** **हमें ये चीज़ बरकरार रखनी है।** ये हमारे **गर्ग साहब** नये-नये हैं। मसूरी में इनका रिसॉर्ट है। इन्होंने ये बात पकड़ी हुई है कि *गुरुजी! मैं मंदिर आऊँ या न आऊँ, पर सुबह उठ कर 20 मिनिट धुन तो कर ही लेता हूँ।* अब आज 13 मार्च को आप आए हैं, तो इतना और रखना कि रात को मेरी तरह 3 मिनिट धुन करके सोना। एग्रीड? अगर हम ये पकड़े रखेंगे, तो धीरे-धीरे हमारी कॉन्सियसनेस में प्रभु बस जाएँगे-बसे तो हैं ही, प्रगट हो जाएँगे। आगे जाकर पूरी बॉडी के अंदर वे

प्रगट हो जाएँगे। सारी बॉडी डिविनाईज़ हो जाएगी। पुराने जोगी कहेंगे कि योगीजी महाराज ने अपनी पूरी बॉडी में प्रभु प्रगटाए हुए थे, सिर्फ चेतना में नहीं। इसलिए उन्हें 'ब्रह्मस्वरूप' कहा जाता था। यह फरक़ है– **'ब्रह्मरूप'** और **'ब्रह्मस्वरूप'** में। काकाजी, पप्पाजी, स्वामीजी **'ब्रह्मस्वरूप'** हैं। इनकी हर क्रिया पॉज़िटिव होगी। वे गुस्सा भी करेंगे, तो वो पॉज़िटिव हो जाएगा। वे हमें प्यार करेंगे, वो पॉज़िटिव हो जाएगा। कोई आज्ञा भी देंगे, तो हमारे लिए वो पॉज़िटिव बन जाएगी। ये सारी बातें कैसी हैं कि जैसे-जैसे हम चलेंगे, वैसे-वैसे अनुभव होगा। हम चलते नहीं हैं इसलिए इस बात का हमें भरोसा बैठता नहीं है। चलेंगे तो रिज़ल्ट आता जाएगा। आप आज़मा कर देखो, **सुबह 20 मिनिट धुन और रात को 3 मिनिट प्रार्थना करके सो जाओगे, तो ऐसी प्रतीति हो जाएगी कि अपना काम चलने तो लगा।** फिर इसका चस्का लग जाएगा। उसके बाद प्रभु की जिम्मेदारी है कि उस चस्के की हमारी वृत्ति को पलटा कर ऐसा माँगता कर दें कि– *'स्वामी मेरा स्वभाव छुड़वा दो।'*

मुझे याद है कि आनंदी दीदी को मुंबई में गौरांग के यहाँ रखा था,तो वो रात को भजन करते हुए बोलती होगी– *'बचाओ-बचाओ।'* तब नीचे पॅट्रोलिंग करते गार्ड गौरांग के यहाँ गए कि *भई! क्या है? इस लड़की को पकड़ कर रखा है क्या?* यह तो आनंद की बात है, पर मेरा कहने का मतलब यह है कि काकाजी कहते ही थे कि–अपना ज्ञान इतना सचोट, सक्रिय और सचेतन है। हम काकाजी का भरोसा करके इस रास्ते चलते हैं और चलते ही रहें–यही प्रार्थना!

व्रतोत्सवसूची

(1)	दि. 14.4.'19,	रविवार	–	रामनौमी, **भगवान श्री स्वामिनारायण जयंती** – व्रत
(2)	दि. 15.4.'19,	सोमवार	–	**प.पू. गुरुजी की पार्षदी दीक्षा तिथि**
(3)	दि. 16.4.'19,	मंगलवार	–	एकादशी – व्रत
(4)	दि. 17.4.'19,	बुधवार	–	**गुरुहरि योगीजी महाराज की दीक्षा तिथि**
(5)	दि. 19.4.'19,	शुक्रवार	–	हनुमान जयंती
(6)	दि. 30.4.'19,	मंगलवार	–	एकादशी – व्रत
(7)	दि. 7.5.'19,	मंगलवार	–	अखात्रीज
(8)	दि. 8.5.'19,	बुधवार	–	गुरुवर्य शास्त्रीजी महाराज की अंतर्धान तिथि
(9)	दि. 12.5.'19,	रविवार	–	**अनुष्ठान शिविर आरंभ** (12 जून तक सायं 7.00 से 9.00)
(10)	दि. 15.5.'19,	बुधवार	–	एकादशी – व्रत
(11)	दि. 17.5.'19,	शुक्रवार	–	नृसिंह जयंती, फलारी व्रत
(12)	दि. 18.5.'19,	शनिवार	–	बुद्ध पूर्णिमा
(13)	दि. 30.5.'19,	गुरुवार	–	एकादशी – व्रत
(14)	दि. 31.5.'19,	शुक्रवार	–	**गुरुहरि योगीजी महाराज की जयंती** **प.पू. गुरुजी की भागवती दीक्षा तिथि**

99 पर्सेन्ट तो काकाजी ने ही ये मूर्ति तराशी और हमें भेंट दी... – संतवर्य प.पू. दासस्वामीजी

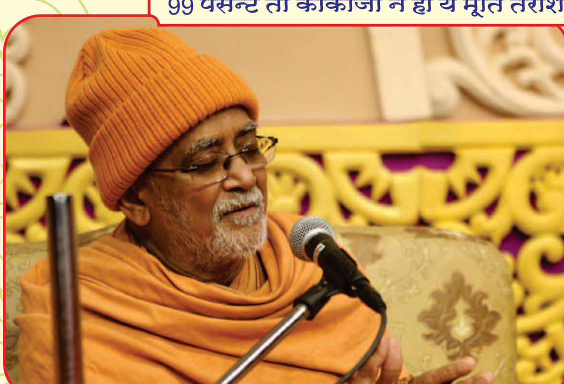

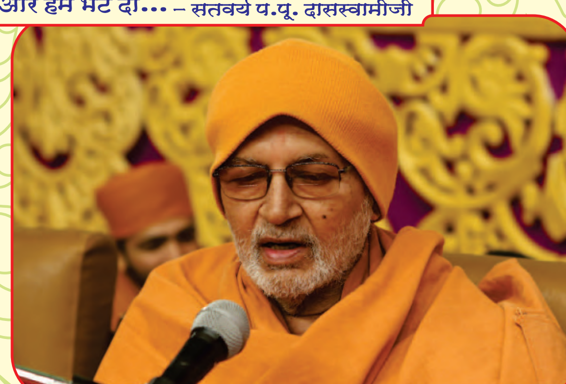

गुरुजी ने काकाजी से करामात सीख ली, जिससे सभी स्वरूपों के हृदय में स्थान ले लिया... – प.पू. वशीभाई

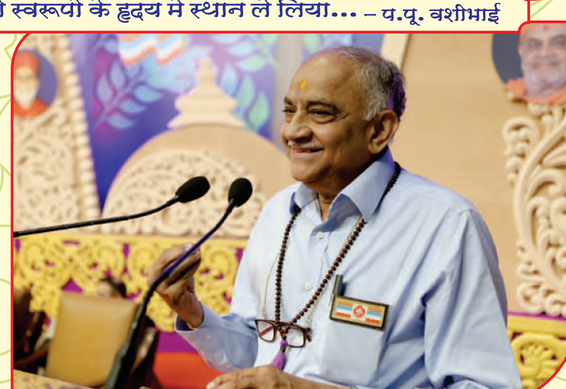

सत्संग में आपका एक दिन भी नहीं गुज़रता, यदि गुरुजी आपके जीवन में नहीं होते... – प.पू. कोठारी प्रेमस्वरूपस्वामीजी

Air Mail **R.N.I. 28971/ 77**

'**Bhagwatkripa**' Bimonthly Magazine – Despatched Bimonthly

If undelivered please return to :— *Printer, Publisher, Editor :-*

SHRI PRABHAKER RAO *FOR* YOGI DIVINE SOCIETY- DELHI

'Taad-dev', Kãkãji Lane, Swãminãrãyan Mãrg, Ashok Vihãr-III, Delhi-110 052 (India) Tel.: 2730 1327

Printed at : **D.K. FINE ART PRESS (P) LTD.,** A 6, Community Centre, Nimri Colony, DELHI-110 05